قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

وَمَالِیَ

पारा - 23

eParah

وَمَا	لِيَ	لَآ أَعْبُدُ	الَّذِي	فَطَرَنِي	وَإِلَيْهِ	تُرْجَعُونَ ﴿22﴾
और क्या है	मुझे	कि ना मैं इबादत करूं	उसकी जिसने	पैदा किया मुझे	और उसी की तरफ़	तुम लौटाए जाओगे

ءَأَتَّخِذُ	مِن دُونِهِۦٓ	ءَالِهَةً	إِن	يُرِدْنِ	الرَّحْمَٰنُ	بِضُرٍّ
क्या मैं बना लूं	उसके सिवा	कुछ इलाह	अगर	इरादा करे मेरे साथ	रहमान	किसी नुक़्सान का

لَّا تُغْنِ	عَنِّي	شَفَٰعَتُهُمْ	شَيْـًٔا	وَلَا	يُنقِذُونِ ﴿23﴾ ج	إِنِّيٓ
ना काम आएगी	मुझे	शफ़ाअत उनकी	कुछ भी	और ना	वो बचा सकेंगे मुझे	बेशक मैं

إِذًا	لَّفِي ضَلَٰلٍ	مُّبِينٍ ﴿24﴾	إِنِّيٓ	ءَامَنتُ	بِرَبِّكُمْ	فَٱسْمَعُونِ ﴿25﴾ ط
तब	अलबत्ता गुमराही में हूंगा	खुली-खुली	बेशक मैं	ईमान लाया मैं	तुम्हारे रब पर	पस सुनो मुझे

قِيلَ	ٱدْخُلِ	ٱلْجَنَّةَ ط	قَالَ	يَٰلَيْتَ	قَوْمِي	يَعْلَمُونَ ﴿26﴾ لا	بِمَا
कहा गया	दाखिल हो जाओ	जन्नत में	उसने कहा	ऐ काश	मेरी क़ौम (के लोग)	वो जान लेते	बवजह उसके जो

غَفَرَ لِي	رَبِّي	وَجَعَلَنِي	مِنَ ٱلْمُكْرَمِينَ ﴿27﴾	وَمَآ	أَنزَلْنَا
बख़्श दिया मुझे	मेरे रब ने	और उसने बना दिया मुझे	बाइज़्ज़त लोगों में से	और नहीं	उतारा हमने

عَلَىٰ قَوْمِهِۦ	مِنۢ بَعْدِهِۦ	مِن جُندٍ	مِّنَ ٱلسَّمَآءِ	وَمَا	كُنَّا	مُنزِلِينَ ﴿28﴾
उसकी क़ौम पर	उसके बाद	कोई लश्कर	आसमान से	और ना	थे हम	उतारने वाले

إِن	كَانَتْ	إِلَّا	صَيْحَةً	وَٰحِدَةً	فَإِذَا	هُمْ	خَٰمِدُونَ ﴿29﴾
ना	थी वो	मगर	चिंघाड़	एक ही	तो यकायक	वो	सब बुझ कर रह गए

وقف غفران

يَٰحَسْرَةً	عَلَى ٱلْعِبَادِ ج	مَا	يَأْتِيهِم	مِّن رَّسُولٍ	إِلَّا	كَانُوا۟	بِهِۦ
हाय अफ़सोस	बंदों पर	नहीं	आया उनके पास	कोई रसूल	मगर	थे वो	उसका

يَسْتَهْزِءُونَ ﴿30﴾	أَلَمْ	يَرَوْا۟	كَمْ	أَهْلَكْنَا	قَبْلَهُم	مِّنَ ٱلْقُرُونِ
वो मज़ाक़ उड़ाते	क्या नहीं	उन्होंने देखा	कितने ही	हलाक कर दिए हमने	इनसे पहले	उम्मतों में से (लोग)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَنَّهُمْ	اِلَيْهِمْ	لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿31﴾ ط	وَاِنْ	كُلٌّ	لَّمَّا	جَمِيْعٌ	لَّدَيْنَا
बेशक वो	तरफ़ उनके	नहीं वो लौटेंगे	और नहीं	वो सब	मगर	सब के सब	हमारे ही पास

ع 2 20 1

مُحْضَرُوْنَ ﴿32﴾ ع	وَاٰيَةٌ	لَّهُمُ	الْاَرْضُ	الْمَيْتَةُ ۚ	اَحْيَيْنٰهَا
हाज़िर किए जाऐंगे	और एक निशानी है	उनके लिए	ज़मीन	मुर्दा	ज़िंदा किया हमने उसे

وَاَخْرَجْنَا	مِنْهَا	حَبًّا	فَمِنْهُ	يَاْكُلُوْنَ ﴿33﴾	وَجَعَلْنَا	فِيْهَا	جَنّٰتٍ
और निकाला हमने	उससे	ग़ल्ला	तो उससे	वो खाते हैं	और बनाए हमने	उसमें	बाग़ात

مِّنْ نَّخِيْلٍ	وَّاَعْنَابٍ	وَّفَجَّرْنَا	فِيْهَا	مِنَ الْعُيُوْنِ ﴿34﴾ لا	لِيَاْكُلُوْا
खजूरों के	और अंगूरों के	और जारी किए हमने	उसमें	चश्में	ताकि वो खाऐं

مِنْ ثَمَرِهٖ لا	وَمَا	عَمِلَتْهُ	اَيْدِيْهِمْ ط	اَفَلَا	يَشْكُرُوْنَ ﴿35﴾
उसके फल से	हालांकि नहीं	बनाया उसे	उनके हाथों ने	क्या फिर नहीं	वो शुक्र अदा करते

سُبْحٰنَ	الَّذِيْ	خَلَقَ	الْاَزْوَاجَ	كُلَّهَا	مِمَّا	تُنْۢبِتُ	الْاَرْضُ
पाक है	वो जिसने	पैदा किए	जोड़े	सब के सब	उसमें से जो	उगाती है	ज़मीन

وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ	وَمِمَّا	لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿36﴾	وَاٰيَةٌ	لَّهُمُ	الَّيْلُ ۚ
और उनके अपने नफ़्सों में से	और उसमें से जो	नहीं वो जानते	और एक निशानी	उनके लिए	रात है

نَسْلَخُ	مِنْهُ	النَّهَارَ	فَاِذَا	هُمْ	مُّظْلِمُوْنَ ﴿37﴾ لا	وَالشَّمْسُ
हम खींच लेते हैं	उससे	दिन को	तो यकायक	वो	अंधेरे में हो जाते हैं	और सूरज

تَجْرِيْ	لِمُسْتَقَرٍّ	لَّهَا ط	ذٰلِكَ	تَقْدِيْرُ	الْعَزِيْزِ	الْعَلِيْمِ ﴿38﴾ ط	وَالْقَمَرَ
वो चल रहा है	ठिकाने के लिए	अपने	ये	अंदाज़ा है	बहुत ज़बरदस्त का	ख़ूब इल्म वाले का	और चांद की

قَدَّرْنٰهُ	مَنَازِلَ	حَتّٰى	عَادَ	كَالْعُرْجُوْنِ	الْقَدِيْمِ ﴿39﴾
मुक़र्रर कीं हमने उसकी	मंज़िलें	यहां तक कि	वो दोबारा हो जाता है	खजूर की सूखी शाख़ की तरह	जो पुरानी हो

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَا الشَّمْسُ	يَنْۢبَغِيْ	لَهَآ	اَنْ	تُدْرِكَ	الْقَمَرَ	وَلَا	الَّيْلُ
ना सूरज	लायक़ है	उसके लिए	कि	वो जा पकड़े	चांद को	और ना	रात

سَابِقُ	النَّهَارِ ؕ	وَكُلٌّ	فِيْ فَلَكٍ	يَّسْبَحُوْنَ ﴿40﴾	وَاٰيَةٌ
सबक़त ले जाने वाली है	दिन से	और सब के सब	एक मदार में	तैर रहे हैं	और एक निशानी है

لَّهُمْ	اَنَّا	حَمَلْنَا	ذُرِّيَّتَهُمْ	فِي الْفُلْكِ	الْمَشْحُوْنِ ﴿41﴾ ۙ	وَخَلَقْنَا
उनके लिए	बेशक हम	सवार किया हमने	उनकी औलाद को	कश्ती में	भरी हुई	और पैदा कीं हमने

لَهُمْ	مِّنْ مِّثْلِهٖ	مَا	يَرْكَبُوْنَ ﴿42﴾	وَاِنْ	نَّشَاْ	نُغْرِقْهُمْ	فَلَا
उनके लिए	उस जैसी (चीज़ों) से	जिन पर	वो सवार होते हैं	और अगर	हम चाहें	हम ग़र्क़ कर दें उन्हें	तो नहीं

صَرِيْخَ	لَهُمْ	وَلَا	هُمْ	يُنْقَذُوْنَ ﴿43﴾ ۙ	اِلَّا	رَحْمَةً	مِّنَّا	وَمَتَاعًا
कोई फ़रियादरस	उनके लिए	और ना	वो	बचाए जा सकेंगे	सिवाय	रहमत के	हमारी तरफ़ से	और फ़ायदा देना

اِلٰى حِيْنٍ ﴿44﴾	وَاِذَا	قِيْلَ	لَهُمُ	اتَّقُوْا	مَا	بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ
एक मुद्दत तक	और जब	कहा जाता है	उन्हें	डरो	उससे जो	तुम्हारे सामने है

وَمَا	خَلْفَكُمْ	لَعَلَّكُمْ	تُرْحَمُوْنَ ﴿45﴾	وَمَا	تَاْتِيْهِمْ	مِّنْ اٰيَةٍ
और जो	तुम्हारे पीछे है	ताकि तुम	रहम किए जाओ	और नहीं	आती उनके पास	कोई निशानी

مِّنْ اٰيٰتِ	رَبِّهِمْ	اِلَّا	كَانُوْا	عَنْهَا	مُعْرِضِيْنَ ﴿46﴾	وَاِذَا	قِيْلَ
निशानियों में से	उनके रब की	मगर	होते हैं वो	उससे	ऐराज़ करने वाले	और जब	कहा जाता है

لَهُمْ	اَنْفِقُوْا	مِمَّا	رَزَقَكُمُ	اللّٰهُ ۙ	قَالَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا
उन्हें	ख़र्च करो	उसमें से जो	रिज़्क़ दिया तुम्हें	अल्लाह ने	कहते हैं	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया

لِلَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا	اَنُطْعِمُ	مَنْ	لَّوْ	يَشَآءُ	اللّٰهُ	اَطْعَمَهٗٓ ۖ	اِنْ
उनसे जो	ईमान लाए	क्या हम खिलाऐं	उसको जिसे	अगर	चाहता	अल्लाह	वो खिला देता उसे	नहीं

اَنْتُمْ	اِلَّا	فِيْ ضَلٰلٍ	مُّبِيْنٍ ﴿47﴾	وَيَقُوْلُوْنَ	مَتٰى	هٰذَا	الْوَعْدُ
तुम	मगर	गुमराही में	खुली-खुली	और वो कहते हैं	कब होगा	ये	वादा

اِنْ	كُنْتُمْ	صٰدِقِيْنَ ﴿48﴾	مَا	يَنْظُرُوْنَ	اِلَّا	صَيْحَةً	وَّاحِدَةً
अगर	हो तुम	सच्चे	नहीं	वो इन्तिज़ार कर रहे	मगर	चिंघाड़ का	एक ही

تَاْخُذُهُمْ	وَهُمْ	يَخِصِّمُوْنَ ﴿49﴾	فَلَا	يَسْتَطِيْعُوْنَ	تَوْصِيَةً	وَّلَآ
वो पकड़ लेगी उन्हें	जबकि वो	वो झगड़ रहे होंगे	पस ना	वो इस्तिताअत रखते होंगे	वसीयत करने की	और ना

ع 3 18 2

اِلٰٓى اَهْلِهِمْ	يَرْجِعُوْنَ ﴿50﴾ ع	وَنُفِخَ	فِي الصُّوْرِ	فَاِذَا	هُمْ
तरफ़ अपने घर वालों के	वो पलट सकेंगे	और फूंका जाएगा	सूर में	तो यकायक	वो

مِّنَ الْاَجْدَاثِ	اِلٰى رَبِّهِمْ	يَنْسِلُوْنَ ﴿51﴾	قَالُوْا	يٰوَيْلَنَا	مَنْۢ
क़ब्रों से	तरफ़ अपने रब के	वो तेज़ी से चल रहे होंगे	वो कहेंगे	हाय अफ़सोस हम पर	किसने

وقف لازم
وقف غفران
وقف منزل

بَعَثَنَا	مِنْ مَّرْقَدِنَا ۜ	هٰذَا	مَا	وَعَدَ	الرَّحْمٰنُ	وَصَدَقَ
उठा दिया हमें	हमारी ख़्वाबगाहों से	ये है	वो जो	वादा किया था	रहमान ने	और सच कहा था

الْمُرْسَلُوْنَ ﴿52﴾	اِنْ	كَانَتْ	اِلَّا	صَيْحَةً	وَّاحِدَةً	فَاِذَا	هُمْ
रसूलों ने	ना	होगी वो	मगर	चिंघाड़	एक ही	तो यकायक	वो

جَمِيْعٌ	لَّدَيْنَا	مُحْضَرُوْنَ ﴿53﴾	فَالْيَوْمَ	لَا تُظْلَمُ	نَفْسٌ	شَيْـًٔا	وَّلَا
सब के सब	हमारे पास	हाज़िर किए जाऐंगे	तो आज के दिन	ना ज़ुल्म किया जाएगा	किसी नफ़्स पर	कुछ भी	और ना

تُجْزَوْنَ	اِلَّا	مَا	كُنْتُمْ	تَعْمَلُوْنَ ﴿54﴾	اِنَّ	اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ	الْيَوْمَ
तुम बदला दिए जाओगे	मगर	जो	थे तुम	तुम अमल करते	बेशक	जन्नत वाले	आज के दिन

فِيْ شُغُلٍ	فٰكِهُوْنَ ﴿55﴾ ج	هُمْ	وَاَزْوَاجُهُمْ	فِيْ ظِلٰلٍ	عَلَى الْاَرَآئِكِ
मशग़लों में	ख़ुश हो रहे होंगे	वो	और बीवियां उनकी	सायों में	तख़्तों पर

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَدَّعُونَ ﴿57﴾ ج	مَّا	وَلَهُمْ	فَاكِهَةٌ	فِيهَا	لَهُمْ	مُتَّكِـُٔونَ ﴿56﴾
वो तलब करेंगे	जो	और उनके लिए होगा	फल होंगे	उसमें	उनके लिए	तकिया लगाए हुए होंगे

اَيُّهَا	الْيَوْمَ	وَامْتَازُوا	رَّحِيمٍ ﴿58﴾	مِّنْ رَّبٍّ	قَوْلًا	سَلٰمٌ قف
ऐ	आज के दिन	और अलग हो जाओ	जो निहायत रहम करने वाला है	रब की तरफ़ से	क़ौल होगा	सलाम

اَنْ	اٰدَمَ	يٰبَنِيٓ	اِلَيْكُمْ	اَعْهَدْ	اَلَمْ	الْمُجْرِمُونَ ﴿59﴾
कि	आदम	ऐ बनी	तुम्हें	मैंने ताकीद की थी	क्या नहीं	मुजरिमों

وَّاَنِ	مُّبِينٌ ﴿60﴾ لا	عَدُوٌّ	لَكُمْ	اِنَّهٗ	الشَّيْطٰنَ ج	لَّا تَعْبُدُوا
और ये कि	खुल्लम-खुल्ला	दुश्मन है	तुम्हारा	बेशक वो	शैतान की	ना तुम इबादत करना

مِنْكُمْ	اَضَلَّ	وَلَقَدْ	مُّسْتَقِيمٌ ﴿61﴾	صِرَاطٌ	هٰذَا	اعْبُدُونِي ط
तुम में से	उसने गुमराह कर दिया	और अलबत्ता तहक़ीक़	सीधा	रास्ता है	ये	इबादत करो मेरी

الَّتِي	جَهَنَّمُ	هٰذِهٖ	تَعْقِلُونَ ﴿62﴾	تَكُونُوا	اَفَلَمْ	كَثِيرًا ط	جِبِلًّا
वो जो	जहन्नम	ये है	तुम अक़्ल से काम लेते	थे तुम	क्या फिर नहीं	बहुत सी	मख़्लूक़ को

تَكْفُرُونَ ﴿64﴾	كُنْتُمْ	بِمَا	الْيَوْمَ	اِصْلَوْهَا	تُوعَدُونَ ﴿63﴾	كُنْتُمْ
तुम कुफ़्र करते	थे तुम	बवजह उसके जो	आज के दिन	दाख़िल हो जाओ इसमें	तुम वादा किए जाते	थे तुम

وَتَشْهَدُ	اَيْدِيهِمْ	وَتُكَلِّمُنَآ	عَلٰٓى اَفْوَاهِهِمْ	نَخْتِمُ	اَلْيَوْمَ
और गवाही देंगे	हाथ उनके	और कलाम करेंगे हमसे	उनके मुंहों पर	हम मोहर लगा देंगे	आज

لَطَمَسْنَا	نَشَآءُ	وَلَوْ	يَكْسِبُونَ ﴿65﴾	كَانُوا	بِمَا	اَرْجُلُهُمْ
अलबत्ता हम मिटा दें	हम चाहें	और अगर	वो कमाई करते	थे वो	बवजह उसके जो	पांव उनके

نَشَآءُ	وَلَوْ	يُبْصِرُونَ ﴿66﴾	فَاَنّٰى	الصِّرَاطَ	فَاسْتَبَقُوا	عَلٰٓى اَعْيُنِهِمْ
हम चाहें	और अगर	वो देख सकेंगे	तो कैसे	रास्ते (की तरफ़)	पस वो दौड़ें	उनकी आंखों को

وقف غفران

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَمَسَخْنٰهُمْ	عَلٰى مَكَانَتِهِمْ	فَمَا	اسْتَطَاعُوْا	مُضِيًّا	وَّلَا
अलबत्ता मस्ख़ कर दें हम उन्हें	उनकी जगहों पर	तो ना	वो इस्तिताअत रखते होंगे	चलने की	और ना

ع 4 17 3

يَرْجِعُوْنَ ﴿67﴾ ع	وَمَنْ	نُّعَمِّرْهُ	نُنَكِّسْهُ	فِي الْخَلْقِ ؕ	اَفَلَا
वो पलट सकेंगे	और वो जो	हम उम्र देते हैं उसे	हम उलटा देते हैं उसे	साख़्त में	क्या भला नहीं

يَعْقِلُوْنَ ﴿68﴾	وَمَا	عَلَّمْنٰهُ	الشِّعْرَ	وَمَا	يَنْۢبَغِيْ	لَهٗ ؕ	اِنْ
वो अक़्ल रखते	और नहीं	सिखाया हमने उसे	शेर	और नहीं	ज़ेब देता	उसे	नहीं है

هُوَ	اِلَّا	ذِكْرٌ	وَّقُرْاٰنٌ	مُّبِيْنٌ ﴿69﴾ ۙ	لِّيُنْذِرَ	مَنْ	كَانَ	حَيًّا
वो	मगर	एक नसीहत	और क़ुरआन	वाज़ेह	ताकि वो डराए	उसे जो	है	ज़िंदा

وَّيَحِقَّ	الْقَوْلُ	عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿70﴾	اَوَلَمْ	يَرَوْا	اَنَّا	خَلَقْنَا
और साबित हो जाए	बात	काफ़िरों पर	क्या भला नहीं	उन्होंने देखा	बेशक हम	पैदा किया हमने

لَهُمْ	مِّمَّا	عَمِلَتْ	اَيْدِيْنَآ	اَنْعَامًا	فَهُمْ	لَهَا	مٰلِكُوْنَ ﴿71﴾
उनके लिए	उसमें से जो	बनाया	हमारे हाथों ने	मवेशियों को	तो वो	उनके	मालिक हैं

وَذَلَّلْنٰهَا	لَهُمْ	فَمِنْهَا	رَكُوْبُهُمْ	وَمِنْهَا	يَاْكُلُوْنَ ﴿72﴾
और मुतीअ कर दिया हमने उन्हें	उनके लिए	तो उनमें से कुछ	सवारियां हैं उनकी	और उनमें से कुछ को	वो खाते हैं

وَلَهُمْ	فِيْهَا	مَنَافِعُ	وَمَشَارِبُ ؕ	اَفَلَا	يَشْكُرُوْنَ ﴿73﴾	وَاتَّخَذُوْا
और उनके लिए	उनमें	कई फ़ायदे हैं	और पीने की चीज़ें हैं	क्या फिर नहीं	वो शुक्र करते	और उन्होंने बना लिए

مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	اٰلِهَةً	لَّعَلَّهُمْ	يُنْصَرُوْنَ ﴿74﴾ ؕ	لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ
सिवाए	अल्लाह के	कई इलाह	ताकि वो	वो मदद किए जाएं	नहीं वो इस्तिताअत रखते

نَصْرَهُمْ ۙ	وَهُمْ	لَهُمْ	جُنْدٌ	مُّحْضَرُوْنَ ﴿75﴾	فَلَا	يَحْزُنْكَ
उनकी मदद की	बल्कि वो ख़ुद	उनके लिए	लश्कर हैं	हाज़िर किए गए	पस ना	ग़मगीन करे आपको

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وقف لازم

اَوَلَمْ	يُعْلِنُوْنَ ﴿76﴾	وَمَا	يُسِرُّوْنَ	مَا	نَعْلَمُ	اِنَّا	قَوْلُهُمْ ۘ
क्या भला नहीं	वो ज़ाहिर करते हैं	और जो कुछ	वो छुपाते हैं	जो कुछ	हम जानते हैं	बेशक हम	बात उनकी

خَصِيْمٌ	هُوَ	فَاِذَا	مِنْ نُّطْفَةٍ	خَلَقْنٰهُ	اَنَّا	الْاِنْسَانُ	يَرَ
झगड़ालू है	वो	तो यकायक	नुत्फ़े से	पैदा किया हमने उसे	बेशक हम	इंसान ने	देखा

مَنْ	قَالَ	خَلْقَهٗ ؕ	وَّنَسِيَ	مَثَلًا	لَنَا	وَضَرَبَ	مُّبِيْنٌ ﴿77﴾
कौन	उसने कहा	अपनी पैदाइश को	और वो भूल गया	मिसाल	हमारे लिए	और उसने बयान की	खुल्लम-खुल्ला

اَنْشَاَهَآ	الَّذِيْٓ	يُحْيِيْهَا	قُلْ	رَمِيْمٌ ﴿78﴾	وَهِيَ	الْعِظَامَ	يُّحْيِ
पैदा किया उन्हें	वो जिसने	ज़िंदा करेगा उन्हें	कह दीजिए	बोसीदा हो चुकी हों	जबकि वो	हड्डीयों को	ज़िंदा करेगा

لَكُمْ	جَعَلَ	الَّذِيْ	عَلِيْمُۨ ﴿79﴾ لا	خَلْقٍ	بِكُلِّ	وَهُوَ	مَرَّةٍ ؕ	اَوَّلَ
तुम्हारे लिए	बनाया	वो जिसने	ख़ूब जानने वाला है	पैदाइश को	हर	और वो	बार	पहली

اَوَ	تُوْقِدُوْنَ ﴿80﴾	مِّنْهُ	اَنْتُمْ	فَاِذَآ	نَارًا	مِّنَ الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ
क्या भला	तुम आग जलाते हो	उससे	तुम	तो यकायक	आग को	सरसब्ज़ दरख़्त से

يَّخْلُقَ	اَنْ	عَلٰٓى	بِقٰدِرٍ	وَالْاَرْضَ	السَّمٰوٰتِ	خَلَقَ	الَّذِيْ	لَيْسَ
वो पैदा करे	कि	इस (बात) पर	क़ादिर	और ज़मीन को	आसमानों	पैदा किया	वो जिसने	नहीं है

وقف غفران

اِذَآ	اَمْرُهٗٓ	اِنَّمَآ	الْعَلِيْمُ ﴿81﴾	الْخَلّٰقُ	وَهُوَ	بَلٰى ق	مِثْلَهُمْ ؕ
जब	काम उसका	बेशक	ख़ूब जानने वाला है	सब कुछ पैदा करने वाला है	और वो	क्यों नहीं	उनकी मानिंद

فَسُبْحٰنَ	فَيَكُوْنُ ﴿82﴾	كُنْ	لَهٗ	يَّقُوْلَ	اَنْ	شَيْئًا	اَرَادَ
पस पाक है	तो वो हो जाती है	हो जा	उसे	वो कहता है	ये कि	किसी चीज़ का	वो इरादा करता है

تُرْجَعُوْنَ ﴿83﴾ ع	وَّاِلَيْهِ	شَيْءٍ	كُلِّ	مَلَكُوْتُ	بِيَدِهٖ	الَّذِيْ
तुम लौटाए जाओगे	और तरफ़ उसी के	चीज़ की	हर	बादशाहत है	हाथ में जिसके	वो जो

ع 5 16 4

© HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

رُكُوْعَاتُهَا: 5 | 56 سُوْرَةُ الصّٰٓفّٰتِ مَكِّيَّةٌ 37 | اٰيَاتُهَا: 182

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ذِكْرًا (3)	فَالتّٰلِيٰتِ	زَجْرًا (2)	فَالزّٰجِرٰتِ	صَفًّا (1)	وَالصّٰٓفّٰتِ
ज़िक्र (क़ुरआन) की	फिर तिलावत करने वालों की	सख़्त डांटना	फिर डांटने वालों की	ख़ूब सफ़ बांधना	क़सम है सफ़ बांधने वालों की

بَيْنَهُمَا	وَمَا	وَالْاَرْضِ	السَّمٰوٰتِ	رَبُّ	لَوَاحِدٌ (4)	اِلٰهَكُمْ	اِنَّ
दर्मियान है इन दोनों के	और जो	और ज़मीन का	आसमानों	रब	यक़ीनन एक ही है	इलाह तुम्हारा	बेशक

بِزِيْنَةِ	الدُّنْيَا	السَّمَآءَ	زَيَّنَّا	اِنَّا	الْمَشَارِقِ (5)	وَرَبُّ
ज़ीनत से	दुनिया को	आसमाने	मुज़य्यन किया हमने	बेशक हम	मशरिक़ों का	और रब

لَا يَسَّمَّعُوْنَ	مَّارِدٍ (7)	مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ	وَحِفْظًا	الْكَوَاكِبِ (6)
नहीं वो कान लगाकर सुन सकते	जो सरकश है	हर शैतान से	और हिफ़ाज़त के लिए	सितारों की

وَّلَهُمْ	دُحُوْرًا	مِّنْ كُلِّ جَانِبٍ (8)	وَيُقْذَفُوْنَ	اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى
और उनके लिए	भगाने के लिए	हर तरफ़ से	और वो फेंके जाते हैं	तरफ़ मलाए आला / मुक़र्रब फ़रिश्तों के

فَاَتْبَعَهٗ	الْخَطْفَةَ	خَطِفَ	مَنْ	اِلَّا	وَّاصِبٌ (9)	عَذَابٌ
तो पीछा करता है उसका	उचक ले जाना	उचक ले जाए	जो कोई	मगर	मुसलसल	अज़ाब है

مَّنْ	اَمْ	خَلْقًا	اَشَدُّ	اَهُمْ	فَاسْتَفْتِهِمْ	ثَاقِبٌ (10)	شِهَابٌ
जिसे	या	पैदाइश में	ज़्यादा सख़्त हैं	क्या वो	पस पूछ लीजिए उनसे	चमकता हुआ	एक शोला

عَجِبْتَ	بَلْ	لَّازِبٍ (11)	مِّنْ طِيْنٍ	خَلَقْنٰهُمْ	اِنَّا	خَلَقْنَا
ताअज्जुब किया आपने	बल्कि	चिपकने वाली	मिट्टी से	पैदा किया हमने उन्हें	बेशक हम	पैदा किया हमने

رَاَوْا	وَاِذَا	لَا يَذْكُرُوْنَ (13)	ذُكِّرُوْا	وَاِذَا	وَيَسْخَرُوْنَ (12)
वो देखते हैं	और जब	नहीं वो नसीहत पकड़ते	वो नसीहत किए जाते हैं	और जब	और वो मजाक़ उड़ाते हैं

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مُّبِيْنٌ ⑮ ج	سِحْرٌ	اِلَّا	هٰذَآ	اِنْ	وَقَالُوْٓا	يَّسْتَسْخِرُوْنَ ⑭ ص	اٰيَةً
खुल्लम-खुल्ला	एक जादू	मगर	ये	नहीं है	और कहते हैं	तो ख़ूब मज़ाक़ उड़ाते हैं	कोई निशानी

لَمَبْعُوْثُوْنَ ⑯ لا	ءَاِنَّا	وَّعِظَامًا	تُرَابًا	وَكُنَّا	مِتْنَا	ءَاِذَا
अलबत्ता दोबारा उठाए जाएंगे	क्या बेशक हम	और हड्डियां	मिट्टी	और हो जाएंगे हम	मर जाएंगे हम	क्या जब

دَاخِرُوْنَ ⑱ ج	وَاَنْتُمْ	نَعَمْ	قُلْ	الْاَوَّلُوْنَ ⑰ ط	اٰبَآؤُنَا	اَوَ
ज़लील व ख़्वार होने वाले हो	और तुम	हां	कह दीजिए	जो पहले (गुज़र चुके)	आबा ओ अजदाद भी हमारे	क्या भला

وَقَالُوْا	يَنْظُرُوْنَ ⑲	هُمْ	فَاِذَا	وَّاحِدَةٌ	زَجْرَةٌ	هِيَ	فَاِنَّمَا
और वो कहेंगे	वो देख रहे होंगे	वो	तो यकायक	एक ही	डांट होगी	वो	तो बेशक

الَّذِيْ	الْفَصْلِ	يَوْمُ	هٰذَا	الدِّيْنِ ⑳	يَوْمُ	هٰذَا	يٰوَيْلَنَا
वो जो	फ़ैसले का	दिन	ये है	बदले का	दिन	ये है	हाय अफ़सोस हम पर

وَاَزْوَاجَهُمْ	ظَلَمُوْا	الَّذِيْنَ	اُحْشُرُوا	تُكَذِّبُوْنَ ㉑ ع	بِهٖ	كُنْتُمْ
और उनके साथियों को	ज़ुल्म किया	उनको जिन्होंने	इकट्ठा करो	तुम झुठलाया करते	इसे	थे तुम

ع 1 21 5

اِلٰى صِرَاطِ	فَاهْدُوْهُمْ	اللّٰهِ	مِنْ دُوْنِ	يَعْبُدُوْنَ ㉒ لا	كَانُوْا	وَمَا
तरफ़ रास्ते	पस राह दिखाओ उन्हें	अल्लाह के	सिवाय	वो इबादत करते	थे वो	और उन्हें जिनकी

لَا	لَكُمْ	مَا	مَّسْـُٔوْلُوْنَ ㉔ لا	اِنَّهُمْ	وَقِفُوْهُمْ	الْجَحِيْمِ ㉓ الربع
नहीं	तुम्हें	क्या है	सवाल किए जाने वाले हैं	बेशक वो	ठहराओ उन्हें	जहन्नम के

الربع

بَعْضُهُمْ	وَاَقْبَلَ	مُسْتَسْلِمُوْنَ ㉖	الْيَوْمَ	هُمْ	بَلْ	تَنَاصَرُوْنَ ㉕
बाज़ उनके	और मुतावज्जह होंगे	फ़रमांबरदार हैं	आज के दिन	वो	बल्कि	तुम एक दूसरे की मदद करते

تَاْتُوْنَنَا	كُنْتُمْ	اِنَّكُمْ	قَالُوْٓا	يَّتَسَآءَلُوْنَ ㉗	عَلٰى بَعْضٍ
आते तुम हमारे पास	थे तुम	बेशक तुम	वो कहेंगे	वो एक दूसरे से सवाल करेंगे	बाज़ पर

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَنِ الْيَمِيْنِ ﴿28﴾	قَالُوْا	بَلْ	لَّمْ	تَكُوْنُوْا	مُؤْمِنِيْنَ ﴿29﴾ ج	وَمَا	كَانَ
दाऐं जानिब से	कहेंगे	बल्कि	ना	थे तुम	ईमान लाने वाले	और ना	था

لَنَا	عَلَيْكُمْ	مِّنْ سُلْطٰنٍ ج	بَلْ	كُنْتُمْ	قَوْمًا	طٰغِيْنَ ﴿30﴾	فَحَقَّ
हमारे लिए	तुम पर	कोई ज़ोर	बल्कि	थे तुम	एक क़ौम	सरकश	तो सच हो गई

عَلَيْنَا	قَوْلُ	رَبِّنَآ ق	اِنَّا	لَذَآئِقُوْنَ ﴿31﴾	فَاَغْوَيْنٰكُمْ	اِنَّا	كُنَّا
हम पर	बात	हमारे रब की	बेशक हम	अलबत्ता चखने वाले हैं	तो बहकाया हमने तुम्हें	बेशक हम	थे हम ही

غٰوِيْنَ ﴿32﴾	فَاِنَّهُمْ	يَوْمَئِذٍ	فِي الْعَذَابِ	مُشْتَرِكُوْنَ ﴿33﴾	اِنَّا	كَذٰلِكَ
बहके हुए	तो बेशक वो	उस दिन	अज़ाब में	बाहम शरीक होंगे	बेशक हम	इसी तरह

نَفْعَلُ	بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿34﴾	اِنَّهُمْ	كَانُوْٓا	اِذَا	قِيْلَ	لَهُمْ	لَآ
हम करेंगे	साथ मुजरिमों के	बेशक वो	थे वो	जब	कहा जाता	उनसे	नहीं

اِلٰهَ	اِلَّا	اللّٰهُ لا	يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿35﴾ لا	وَيَقُوْلُوْنَ	اَئِنَّا
कोई इलाह (बरहक़)	सिवाए	अल्लाह के	वो तकब्बुर करते थे	और वो कहते	क्या बेशक हम

لَتَارِكُوْٓا	اٰلِهَتِنَا	لِشَاعِرٍ	مَّجْنُوْنٍ ﴿36﴾ ط
अलबत्ता छोड़ देने वाले हैं	अपने माबूदों को	वास्ते एक शायर	मजनून के

بَلْ	جَآءَ	بِالْحَقِّ	وَصَدَّقَ	الْمُرْسَلِيْنَ ﴿37﴾		
बल्कि	वो लाया है	हक़ को	और उसने तसदीक़ की	रसूलों की		

اِنَّكُمْ	لَذَآئِقُوا	الْعَذَابِ	الْاَلِيْمِ ﴿38﴾ ج	وَمَا	تُجْزَوْنَ	اِلَّا	مَا
बेशक तुम	अलबत्ता चखने वाले हो	अज़ाब	दर्दनाक को	और नहीं	तुम बदला दिए जाओगे	मगर	जो

كُنْتُمْ	تَعْمَلُوْنَ ﴿39﴾ لا	اِلَّا	عِبَادَ	اللّٰهِ	الْمُخْلَصِيْنَ ﴿40﴾	اُولٰٓئِكَ
थे तुम	तुम अमल करते	सिवाए	बंदे	अल्लाह के	जो ख़ालिस किए हुए हैं	यही लोग हैं

لَهُمْ	رِزْقٌ	مَّعْلُوْمٌ ﴿41﴾ لا	فَوَاكِهُ ج	وَهُمْ	مُّكْرَمُوْنَ ﴿42﴾ لا	فِيْ جَنّٰتِ
उनके लिए	रिज़्क़ है	मालूम	फल हैं	और वो	मुअज़्ज़िज़ होंगे	बाग़ात में

© HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

النَّعِيْمِ ﴿43﴾	عَلٰى سُرُرٍ	مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿44﴾	يُطَافُ	عَلَيْهِمْ	بِكَاْسٍ
नेअमतों के	तख़्तों पर	आमने सामने बैठने वाले	फिराया जायगा	उन पर	भरा हुआ साग़र

مِّنْ مَّعِيْنٍ ﴿45﴾	بَيْضَآءَ	لَذَّةٍ	لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿46﴾	لَا	فِيْهَا	غَوْلٌ	وَّلَا
बहते चश्मे से	सफ़ेद	लज़्ज़त का सबब	पीने वालों के लिए	ना	उसमें	सर दर्द होगी	और ना

هُمْ	عَنْهَا	يُنْزَفُوْنَ ﴿47﴾	وَعِنْدَهُمْ	قٰصِرٰتُ	الطَّرْفِ
वो	उससे	वो अक़्ल ज़ाइल किए जाऐंगे	और उनके पास होंगी	नीची रखने वालियां	निगाहों को

عِيْنٌ ﴿48﴾	كَاَنَّهُنَّ	بَيْضٌ	مَّكْنُوْنٌ ﴿49﴾	فَاَقْبَلَ	بَعْضُهُمْ
मोटी आंखों वालियां	गोया कि वो	अंडे हैं	छुपा कर रखे गए	तो मुतावज्जह होंगे	बाज़ उनके

عَلٰى بَعْضٍ	يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿50﴾	قَالَ	قَآئِلٌ	مِّنْهُمْ	اِنِّيْ	كَانَ
बाज़ पर	वो एक दूसरे से सवाल करेंगे	कहेगा	एक कहने वाला	उनमें से	बेशक मैं	था

لِيْ	قَرِيْنٌ ﴿51﴾	يَّقُوْلُ	ءَاِنَّكَ	لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ ﴿52﴾	ءَاِذَا	مِتْنَا
मेरा	एक साथी	वो कहा करता था	क्या बेशक तुम	अलबत्ता तसदीक़ करने वालों में से हो	क्या जब	हम मर जाऐंगे

وَكُنَّا	تُرَابًا	وَّعِظَامًا	ءَاِنَّا	لَمَدِيْنُوْنَ ﴿53﴾	قَالَ	هَلْ
और हो जाऐंगे हम	मिट्टी	और हड्डियां	क्या बेशक हम	अलबत्ता बदला दिए जाने वाले हैं	उसने कहा	क्या

اَنْتُمْ	مُّطَّلِعُوْنَ ﴿54﴾	فَاطَّلَعَ	فَرَاٰهُ	فِيْ سَوَآءِ	الْجَحِيْمِ ﴿55﴾	قَالَ
तुम	झांक कर देखने वाले हो	तो वो झांकेगा	तो वो देखेगा उसे	वस्त/दर्मियान में	जहन्नम के	वो कहेगा

تَاللّٰهِ	اِنْ	كِدْتَّ	لَتُرْدِيْنِ ﴿56﴾	وَلَوْلَا	نِعْمَةُ	رَبِّيْ	لَكُنْتُ
क़सम अल्लाह की	बेशक	क़रीब था तू	अलबत्ता तू हलाक कर देता मुझे	और अगर ना होती	नेअमत	मेरे रब की	अलबत्ता होता मैं

مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿57﴾	اَفَمَا	نَحْنُ	بِمَيِّتِيْنَ ﴿58﴾	اِلَّا	مَوْتَتَنَا	الْاُوْلٰى
हाज़िर किए जाने वालों में से	क्या भला नहीं	हम	मरने वाले	मगर	मौत हमारी	पहली

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَمَا	نَحْنُ	بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿59﴾	اِنَّ	هٰذَا	لَهُوَ	الْفَوْزُ	الْعَظِيْمُ ﴿60﴾
और नहीं	हम	अज़ाब दिए जाने वाले	बेशक	ये	अलबत्ता वो ही	कामयाबी है	बहुत बड़ी

لِمِثْلِ	هٰذَا	فَلْيَعْمَلِ	الْعٰمِلُوْنَ ﴿61﴾	اَذٰلِكَ	خَيْرٌ	نُّزُلًا	اَمْ
मानिंद	उसी के	पस चाहिए कि अमल करें	अमल करने वाले	क्या ये	बेहतर	मेहमानी है	या

شَجَرَةُ	الزَّقُّوْمِ ﴿62﴾	اِنَّا	جَعَلْنٰهَا	فِتْنَةً	لِّلظّٰلِمِيْنَ ﴿63﴾	اِنَّهَا
दरख़्त	थूहर का	बेशक हम	बनाया हमने उसे	फ़ितना	ज़ालिमों के लिए	बेशक वो

شَجَرَةٌ	تَخْرُجُ	فِيْٓ اَصْلِ	الْجَحِيْمِ ﴿64﴾	طَلْعُهَا	كَاَنَّهٗ	رُءُوْسُ
एक दरख़्त है	जो निकलता/उगता है	तह/जड़ में	जहन्नम की	ख़ोशे उसके	गोया कि वो	सर है

الشَّيٰطِيْنِ ﴿65﴾	فَاِنَّهُمْ	لَاٰكِلُوْنَ	مِنْهَا	فَمَالِـُٔوْنَ	مِنْهَا
शैतानों के	पस बेशक वो	अलबत्ता खाने वाले हैं	उससे	फिर भरने वाले हैं	उससे

الْبُطُوْنَ ﴿66﴾	ثُمَّ	اِنَّ	لَهُمْ	عَلَيْهَا	لَشَوْبًا	مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿67﴾	ثُمَّ
पेटों को	फिर	बेशक	उनके लिए	उस पर	अलबत्ता आमेज़िश है	खौलते पानी की	फिर

اِنَّ	مَرْجِعَهُمْ	لَاِلَى	الْجَحِيْمِ ﴿68﴾	اِنَّهُمْ	اَلْفَوْا	اٰبَآءَهُمْ
बेशक	वापसी उनकी	अलबत्ता तरफ़	जहन्नम के है	बेशक वो	उन्होंने पाया	अपने आबा ओ अजदाद को

ضَآلِّيْنَ ﴿69﴾	فَهُمْ	عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ	يُهْرَعُوْنَ ﴿70﴾	وَلَقَدْ	ضَلَّ	قَبْلَهُمْ
गुमराह	तो वो	उनके नक़्शे क़दम पर	वो दौड़ए जाते हैं	और अलबत्ता तहक़ीक़	भटक गए	उनसे क़ब्ल

اَكْثَرُ	الْاَوَّلِيْنَ ﴿71﴾	وَلَقَدْ	اَرْسَلْنَا	فِيْهِمْ	مُّنْذِرِيْنَ ﴿72﴾	فَانْظُرْ
बहुत से	पहले लोग	और अलबत्ता तहक़ीक़	भेजे हमने	उनमें	डराने वाले	तो देखो

كَيْفَ	كَانَ	عَاقِبَةُ	الْمُنْذَرِيْنَ ﴿73﴾	اِلَّا	عِبَادَ	اللّٰهِ	الْمُخْلَصِيْنَ ﴿74﴾ ع
कैसा	हुआ	अंजाम	डराए जाने वालों का	मगर	बंदे	अल्लाह के	जो ख़ालिस किए हुए हैं

ع 2 53 6

WELFARE FOUNDATION

وَلَقَدْ	نَادٰىنَا	نُوْحٌ	فَلَنِعْمَ	الْمُجِيْبُوْنَ ﴿75﴾	وَنَجَّيْنٰهُ
और अलबत्ता तहक़ीक़	पुकारा हमें	नूह ने	पस अलबत्ता कितने अच्छे हैं	जवाब देने वाले	और निजात दी हमने उसे

وَاَهْلَهٗ	مِنَ الْكَرْبِ	الْعَظِيْمِ ﴿76﴾	وَجَعَلْنَا	ذُرِّيَّتَهٗ	هُمُ
और उसके घर वालों को	मुसीबत से	बहुत बड़ी	और रखा हमने	उसकी औलाद को	वो ही

الْبٰقِيْنَ ﴿77﴾	وَتَرَكْنَا	عَلَيْهِ	فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿78﴾	سَلٰمٌ	عَلٰى نُوْحٍ
बाक़ी रहने वाले	और बाक़ी रखा हमने	उस पर (ज़िक्र ख़ैर)	बाद वालों में	सलाम है	नूह पर

فِي الْعٰلَمِيْنَ ﴿79﴾	اِنَّا	كَذٰلِكَ	نَجْزِي	الْمُحْسِنِيْنَ ﴿80﴾	اِنَّهٗ
तमाम जहान वालों में	बेशक हम	इसी तरह	हम बदला देते हैं	एहसान करने वालों को	बेशक वो

مِنْ عِبَادِنَا	الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿81﴾	ثُمَّ	اَغْرَقْنَا	الْاٰخَرِيْنَ ﴿82﴾	وَاِنَّ
हमारे बंदों में से था	जो मोमिन हैं	फिर	ग़र्क़ किया हमने	दूसरों को	और बेशक

وقف لازم

مِنْ شِيْعَتِهٖ	لَاِبْرٰهِيْمَ ﴿83﴾	اِذْ	جَآءَ	رَبَّهٗ	بِقَلْبٍ	سَلِيْمٍ ﴿84﴾
उसके गिरोह में से	अलबत्ता इब्राहीम था	जब	वो आया	अपने रब के पास	साथ दिल	सलामत के

اِذْ	قَالَ	لِاَبِيْهِ	وَقَوْمِهٖ	مَاذَا	تَعْبُدُوْنَ ﴿85﴾ ج	اَئِفْكًا
जब	उसने कहा	अपने बाप से	और अपनी क़ौम से	किस की	तुम इबादत करते हो	क्या गढ़े हुए

اٰلِهَةً	دُوْنَ	اللّٰهِ	تُرِيْدُوْنَ ﴿86﴾ ط	فَمَا	ظَنُّكُمْ
माबूदों को	सिवाए	अल्लाह के	तुम चाहते हो	तो क्या है	गुमान तुम्हारा

بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿87﴾	فَنَظَرَ	نَظْرَةً	فِي النُّجُوْمِ ﴿88﴾ لا	فَقَالَ	اِنِّيْ
रब्बल आलमीन के बारे में	तो उसने देखा	एक नज़र	सितारों में	तो उसने कहा	बेशक मैं

سَقِيْمٌ ﴿89﴾	فَتَوَلَّوْا	عَنْهُ	مُدْبِرِيْنَ ﴿90﴾	فَرَاغَ	اِلٰٓى اٰلِهَتِهِمْ
बीमार हूँ	तो वो लौट गए	उससे	पीठ फेर कर	तो वो चुपके से गया	तरफ़ उनके इलाहों के

فَقَالَ	اَلَا	تَاْكُلُوْنَ ﴿91﴾ ج	مَا		
फिर उसने कहा	क्या नहीं	तुम खाते	क्या है		

لَكُمْ	لَا تَنْطِقُوْنَ ﴿92﴾	فَرَاغَ	عَلَيْهِمْ	ضَرْبًۢا	بِالْيَمِيْنِ ﴿93﴾	فَاَقْبَلُوْٓا
तुम्हें	नहीं तुम बोलते	फिर वो जा पड़ा	उन पर	ज़रब लगाते हुए	दाऐं हाथ से	तो वो मुतावज्जाह हुए

اِلَيْهِ	يَزِفُّوْنَ ﴿94﴾	قَالَ	اَتَعْبُدُوْنَ	مَا	تَنْحِتُوْنَ ﴿95﴾	وَاللّٰهُ
तरफ़ उसके	तेज दौड़ते हुए	कहा	क्या तुम इबादत करते हो	उनकी जिन्हें	तुम तराशते हो	और अल्लाह ने

خَلَقَكُمْ	وَمَا	تَعْمَلُوْنَ ﴿96﴾	قَالُوا	ابْنُوْا	لَهٗ	بُنْيَانًا	فَاَلْقُوْهُ
पैदा किया तुम्हें	और उसे जो	तुम करते हो	उन्होंने कहा	बनाओ	उसके लिए	एक इमारत	फिर डालो उसे

فِي الْجَحِيْمِ ﴿97﴾	فَاَرَادُوْا	بِهٖ	كَيْدًا	فَجَعَلْنٰهُمُ	الْاَسْفَلِيْنَ ﴿98﴾
दहकती आग में	तो उन्होंने इरादा किया	साथ उसके	चाल चलने का	तो कर दिया हमने उन्हें	सबसे निचला

وَقَالَ	اِنِّيْ	ذَاهِبٌ	اِلٰى رَبِّيْ	سَيَهْدِيْنِ ﴿99﴾	رَبِّ	هَبْ
और उसने कहा	बेशक मैं	जाने वाला हूं	तरफ़ अपने रब के	अनक़रीब वो रहनुमाई करेगा मेरी	ऐ मेरे रब	अता कर

لِيْ	مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿100﴾	فَبَشَّرْنٰهُ	بِغُلٰمٍ	حَلِيْمٍ ﴿101﴾	فَلَمَّا	بَلَغَ
मुझे	सालेहीन में से	तो ख़ुशख़बरी दी हमने उसे	एक लड़के की	जो बुर्दबार था	फिर जब	वो पहुंचा

مَعَهُ	السَّعْيَ	قَالَ	يٰبُنَيَّ	اِنِّيْٓ	اَرٰى	فِي الْمَنَامِ	اَنِّيْٓ
साथ उसके	दौड़-धूप को	कहा	ऐ मेरे बेटे	कि बेशक मैं	मैंने देखा है	ख़्वाब में	कि मैं

اَذْبَحُكَ	فَانْظُرْ	مَاذَا	تَرٰى ؕ	قَالَ	يٰٓاَبَتِ	افْعَلْ	مَا
ज़िबाह कर रहा हूं तुझे	तो देख	क्या है	तेरी राय	कहा	ऐ मेरे अब्बा जान	आप कर डालिए	जो

تُؤْمَرُ ز	سَتَجِدُنِيْٓ	اِنْ	شَآءَ	اللّٰهُ	مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿102﴾	فَلَمَّآ
आप हुक्म दिए गए हैं	ज़रूर आप पाऐंगे मुझे	अगर	चाहा	अल्लाह ने	सब्र करने वालों में से	फिर जब

اَسْلَمَا	وَتَلَّهٗ	لِلْجَبِيْنِ ﴿103﴾ ج	وَنَادَيْنٰهُ	اَنْ	يّٰٓاِبْرٰهِيْمُ ﴿104﴾ لا
वो दोनों मुतीअ हो गए	और उसने लिटा दिया उसे	पेशानी के बल	और पुकारा हमने उसे	कि	ऐ इब्राहीम

قَدْ	صَدَّقْتَ	الرُّءْيَا ۚ	اِنَّا	كَذٰلِكَ	نَجْزِى	الْمُحْسِنِيْنَ (105)	اِنَّ
तहक़ीक़	सच कर दिखाया तूने	ख़्वाब को	बेशक हम	इसी तरह	हम बदला देते हैं	मोहसिनीन को	बेशक

هٰذَا	لَهُوَ	الْبَلٰٓؤُا	الْمُبِيْنُ (106)	وَفَدَيْنٰهُ	بِذِبْحٍ	عَظِيْمٍ (107)
ये	अलबत्ता वो	आज़माइश थी	खुली-खुली	और फ़िदया दिया हमने उसका	साथ एक क़ुर्बानी	बहुत बड़ी के

وَتَرَكْنَا	عَلَيْهِ	فِى الْاٰخِرِيْنَ (108) ۖ	سَلٰمٌ	عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ (109)	كَذٰلِكَ
और बाक़ी रखा हमने	उस पर(ज़िक्र ख़ैर)	बाद वालों में	सलाम है	इब्राहीम पर	इसी तरह

نَجْزِى	الْمُحْسِنِيْنَ (110)	اِنَّهٗ	مِنْ عِبَادِنَا	الْمُؤْمِنِيْنَ (111)
हम बदला देते हैं	एहसान करने वालों को	बेशक वो	हमारे बंदों में से था	जो मोमिन हैं

وَبَشَّرْنٰهُ	بِاِسْحٰقَ	نَبِيًّا	مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ (112)	وَبٰرَكْنَا	عَلَيْهِ
और ख़ुशख़बरी दी हमने उसे	इसहाक़ की	एक नबी	सालेहीन में से	और बरकत नाज़िल की हमने	उस पर

وَعَلٰٓى اِسْحٰقَ ؕ	وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا	مُحْسِنٌ	وَّظَالِمٌ	لِّنَفْسِهٖ	مُبِيْنٌ (113) ع
और इसहाक़ पर	और उन दोनों की औलाद में से	कोई मोहसिन है	और कोई ज़ालिम है	अपने नफ़्स के लिए	खुल्लम-खुल्ला

ع 3 39 7

وَلَقَدْ	مَنَنَّا	عَلٰى مُوْسٰى	وَهٰرُوْنَ (114) ۚ	وَنَجَّيْنٰهُمَا	وَقَوْمَهُمَا
और अलबत्ता तहक़ीक़	एहसान किया हमने	ऊपर मूसा	और हारून के	और निजात दी हमने उन दोनों को	और उन दोनों की क़ौम को

مِنَ الْكَرْبِ	الْعَظِيْمِ (115) ۚ	وَنَصَرْنٰهُمْ	فَكَانُوْا	هُمُ	الْغٰلِبِيْنَ (116) ۚ
मुसीबत से	बहुत बड़ी	और मदद की हमने उनकी	फिर हो गए वो	वो ही	ग़ालिब

وَاٰتَيْنٰهُمَا	الْكِتٰبَ	الْمُسْتَبِيْنَ (117) ۚ	وَهَدَيْنٰهُمَا	الصِّرَاطَ
और दी हमने उन दोनों को	किताब	वाज़ेह	और हिदायत दी हमने उन दोनों को	रास्ते

الْمُسْتَقِيْمَ (118) ۚ	وَتَرَكْنَا	عَلَيْهِمَا	فِى الْاٰخِرِيْنَ (119) ۙ	سَلٰمٌ	عَلٰى مُوْسٰى
सीधे की	और बाक़ी रखा हमने	उन दोनों पर (ज़िक्र ख़ैर)	बाद वालों में	सलाम हो	ऊपर मूसा

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَهٰرُوْنَ ﴿120﴾	اِنَّا	كَذٰلِكَ	نَجْزِى	الْمُحْسِنِيْنَ ﴿121﴾	اِنَّهُمَا
और हारून के	यक़ीनन हम	इसी तरह	हम बदला देते हैं	मोहसिनीन को	बेशक वो दोनों

مِنْ عِبَادِنَا	الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿122﴾	وَاِنَّ	اِلْيَاسَ	لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿123﴾ ط	اِذْ
हमारे बंदों में से थे	जो मोमिन हैं	और बेशक	इलयास	अलबत्ता रसूलों में से था	जब

قَالَ	لِقَوْمِهٖٓ	اَلَا	تَتَّقُوْنَ ﴿124﴾	اَتَدْعُوْنَ	بَعْلًا	وَّتَذَرُوْنَ
उसने कहा	अपनी क़ौम को	क्या नहीं	तुम डरते	क्या तुम पुकारते हो	बअल को	और तुम छोड़ देते हो (अल्लाह को)

اَحْسَنَ	الْخَالِقِيْنَ ﴿125﴾ لا	اللّٰهَ	رَبَّكُمْ	وَرَبَّ	اٰبَآئِكُمُ	الْاَوَّلِيْنَ ﴿126﴾
बेहतरीन	पैदा करने वाले को	अल्लाह	रब तुम्हारा	और रब	तुम्हारे आबा ओ अजदाद	पहलों का

فَكَذَّبُوْهُ	فَاِنَّهُمْ	لَمُحْضَرُوْنَ ﴿127﴾ لا	اِلَّا	عِبَادَ	اللّٰهِ	الْمُخْلَصِيْنَ ﴿128﴾
तो उन्होंने झुठला दिया उसे	तो बेशक वो	ज़रूर हाज़िर किए जाने वाले हैं	मगर	बंदे	अल्लाह के	जो ख़ालिस किए हुए हैं

وَتَرَكْنَا	عَلَيْهِ	فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿129﴾ لا	سَلٰمٌ	عَلٰٓى اِلْ يَاسِيْنَ ﴿130﴾	اِنَّا
और बाक़ी रखा हमने	उस पर (ज़िक्र ख़ैर)	बाद वालों में	सलाम हो	ऊपर इलयास के	बेशक हम

كَذٰلِكَ	نَجْزِى	الْمُحْسِنِيْنَ ﴿131﴾	اِنَّهٗ	مِنْ عِبَادِنَا	الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿132﴾
इसी तरह	हम बदला देते हैं	मोहसिनीन को	बेशक वो	हमारे बंदों में से था	जो मोमिन हैं

وَاِنَّ	لُوْطًا	لَّمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿133﴾ ط	اِذْ	نَجَّيْنٰهُ	وَاَهْلَهٗٓ
और बेशक	लूत	अलबत्ता रसूलों में से था	जब	निजात दी हमने उसे	और उसके घर वालों को

اَجْمَعِيْنَ ﴿134﴾ لا	اِلَّا	عَجُوْزًا	فِى الْغٰبِرِيْنَ ﴿135﴾	ثُمَّ	دَمَّرْنَا
सब के सब को	सिवाए	एक बुढ़िया के	पीछे रह जाने वालों में	फिर	तबाह कर दिया हमने

الْاٰخِرِيْنَ ﴿136﴾	وَاِنَّكُمْ	لَتَمُرُّوْنَ	عَلَيْهِمْ	مُّصْبِحِيْنَ ﴿137﴾ لا	وَبِالَّيْلِ ط
दूसरों को	और बेशक तुम	अलबत्ता तुम गुज़रते हो	उन पर	इस हाल में कि सुबह करने वाले हो	और रात को

© ALI HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 4 25 8

اَفَلَا	تَعْقِلُوْنَ ﴿138﴾ ع	وَاِنَّ	يُوْنُسَ	لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿139﴾ ط	اِذْ	اَبَقَ
क्या भला नहीं	तुम अक़्ल रखते	और बेशक	यूनुस	अलबत्ता रसूलों में से था	जब	वो भाग कर गया

اِلَى الْفُلْكِ	الْمَشْحُوْنِ ﴿140﴾ لا	فَسَاهَمَ	فَكَانَ	مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ﴿141﴾ ج
तरफ़ कश्ती	भरी हुई के	तो क़ुरआ डाला	फिर वो हो गया	हार जाने वालों में से

فَالْتَقَمَهُ	الْحُوْتُ	وَهُوَ	مُلِيْمٌ ﴿142﴾	فَلَوْلَآ	اَنَّهٗ	كَانَ
तो लुक़्मा बना लिया उसका	मछली ने	और वो	मलामत ज़दा था	फिर अगर ना	ये कि	होता वो

النصف

مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ﴿143﴾ لا	لَلَبِثَ	فِيْ بَطْنِهٖٓ	اِلٰى يَوْمِ	يُبْعَثُوْنَ ﴿144﴾ النصف ج
तस्बीह करने वालों में से	अलबत्ता वो ठहरा रहता	उसके पेट में	उस दिन तक	(जब) वो दोबारा उठाए जाऐंगे

فَنَبَذْنٰهُ	بِالْعَرَآءِ	وَهُوَ	سَقِيْمٌ ﴿145﴾ ج	وَاَنْۢبَتْنَا	عَلَيْهِ	شَجَرَةً
तो हमने फेंक दिया उसे	चटियल मैदान में	इस हाल में कि वो	बीमार था	और उगाया हमने	उस पर	एक पौधा

مِّنْ يَّقْطِيْنٍ ﴿146﴾ ج	وَاَرْسَلْنٰهُ	اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ	اَوْ	يَزِيْدُوْنَ ﴿147﴾ ج	فَاٰمَنُوْا
कद्दू की बेल का	और भेजा हमने उसे	तरफ़ सौ हज़ार (एक लाख) के	बल्कि	वो ज़्यादा होंगे	तो वो ईमान ले आए

فَمَتَّعْنٰهُمْ	اِلٰى حِيْنٍ ﴿148﴾ ط	فَاسْتَفْتِهِمْ	اَلِرَبِّكَ	الْبَنَاتُ
तो फ़ायदा दिया हमने उन्हें	एक वक़्त तक	पस पूछो उनसे	क्या आपके रब के लिए हैं	बेटियां

وَلَهُمُ	الْبَنُوْنَ ﴿149﴾ لا	اَمْ	خَلَقْنَا	الْمَلٰٓئِكَةَ	اِنَاثًا	وَّهُمْ
और उनके लिए हैं	बेटे	या	बनाया हमने	फ़रिश्तों को	औरतें	जबकि वो

شٰهِدُوْنَ ﴿150﴾	اَلَآ	اِنَّهُمْ	مِّنْ اِفْكِهِمْ	لَيَقُوْلُوْنَ ﴿151﴾ لا	وَلَدَ
हाज़िर थे	ख़बरदार	बेशक वो	अपने झूठ ही से	अलबत्ता वो कहते हैं	कि जन्म दिया

وَاِنَّهُمْ	لَكٰذِبُوْنَ ﴿152﴾	اَصْطَفَى	الْبَنَاتِ	عَلَى الْبَنِيْنَ ﴿153﴾ ط	مَا	لَكُمْ قف
और बेशक वो	अलबत्ता झूठे हैं	क्या उसने चुन लिया	बेटियों को	बेटों पर	क्या है	तुम्हें

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

كَيْفَ	تَحْكُمُوْنَ ﴿154﴾	اَفَلَا	تَذَكَّرُوْنَ ﴿155﴾ ج	اَمْ	لَكُمْ	سُلْطٰنٌ
कैसे	तुम फ़ैसले करते हो	क्या भला नहीं	तुम नसीहत पकड़ते	या	तुम्हारे लिए	कोई दलील है

مُّبِيْنٌ ﴿156﴾ لا	فَاْتُوْا	بِكِتٰبِكُمْ	اِنْ	كُنْتُمْ	صٰدِقِيْنَ ﴿157﴾	وَجَعَلُوْا	بَيْنَهٗ
वाज़ेह	पस ले आओ	अपनी किताब	अगर	हो तुम	सच्चे	और उन्होंने बनाया	दर्मियान उसके

وَبَيْنَ	الْجِنَّةِ	نَسَبًا ط	وَلَقَدْ	عَلِمَتِ	الْجِنَّةُ	اِنَّهُمْ	لَمُحْضَرُوْنَ ﴿158﴾ لا
और दर्मियान	जिन्नों के	एक रिश्ता	और अलबत्ता तहक़ीक़	जान लिया	जिन्नों ने	बेशक वो	ज़रूर हाज़िर किए जाऐंगे

سُبْحٰنَ	اللّٰهِ	عَمَّا	يَصِفُوْنَ ﴿159﴾ لا	اِلَّا	عِبَادَ	اللّٰهِ	الْمُخْلَصِيْنَ ﴿160﴾
पाक है	अल्लाह	उससे जो	वो बयान करते हैं	सिवाए	बंदे	अल्लाह के	जो ख़ालिस किए हुए हैं

فَاِنَّكُمْ	وَمَا	تَعْبُدُوْنَ ﴿161﴾ لا	مَآ	اَنْتُمْ	عَلَيْهِ	بِفٰتِنِيْنَ ﴿162﴾ لا
पस बेशक तुम सब	और जिनकी	तुम इबादत करते हो	नहीं	तुम	उसके ख़िलाफ़	फ़ितने में डालने वाले

اِلَّا	مَنْ	هُوَ	صَالِ	الْجَحِيْمِ ﴿163﴾	وَمَا	مِنَّآ	اِلَّا	لَهٗ
मगर	उसे जो	वो	दाख़िल होने वाला है	जहन्नम में	और नहीं	हम में से कोई	मगर	उसके लिए

مَقَامٌ	مَّعْلُوْمٌ ﴿164﴾ لا	وَّاِنَّا	لَنَحْنُ	الصَّآفُّوْنَ ﴿165﴾ ج	وَاِنَّا	لَنَحْنُ
एक मक़ाम है	मालूम	और बेशक हम	अलबत्ता हम	सफ़ बांधने वाले हैं	और बेशक हम	अलबत्ता हम ही

الْمُسَبِّحُوْنَ ﴿166﴾	وَاِنْ	كَانُوْا	لَيَقُوْلُوْنَ ﴿167﴾ لا	لَوْ	اَنَّ	عِنْدَنَا	ذِكْرًا
तस्बीह करने वाले हैं	और बेशक	थे वो	अलबत्ता वो कहते	अगर	ये कि (होती)	हमारे पास	नसीहत

مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿168﴾ لا	لَكُنَّا	عِبَادَ	اللّٰهِ	الْمُخْلَصِيْنَ ﴿169﴾	فَكَفَرُوْا	بِهٖ
पहलों में से	अलबत्ता होते हम	बंदे	अल्लाह के	जो ख़ालिस किए हुए हैं	तो उन्होंने कुफ़्र किया	साथ उसके

فَسَوْفَ	يَعْلَمُوْنَ ﴿170﴾	وَلَقَدْ	سَبَقَتْ	كَلِمَتُنَا	لِعِبَادِنَا	الْمُرْسَلِيْنَ ﴿171﴾ ج
तो अनक़रीब	वो जान लेंगे	और अलबत्ता तहक़ीक़	पहले गुज़र चुकी है	बात हमारी	हमारे बंदों के लिए	जो भेजे हुए हैं

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

إِنَّهُمْ	لَهُمُ	الْمَنْصُوْرُوْنَ ﴿172﴾	وَإِنَّ	جُنْدَنَا	لَهُمُ	الْغٰلِبُوْنَ ﴿173﴾
बेशक वो	अलबत्ता वो ही	मदद किए जाऐंगे	और बेशक	लश्कर हमारा	अलबत्ता वो ही है	ग़ालिब आने वाला

فَتَوَلَّ	عَنْهُمْ	حَتّٰى حِيْنٍ ﴿174﴾	وَّأَبْصِرْهُمْ	فَسَوْفَ	يُبْصِرُوْنَ ﴿175﴾
तो मुंह फेर लीजिए	उनसे	एक वक़्त तक	और देखते रहिए उन्हें	पस अनक़रीब	वो भी देख लेंगे

أَفَبِعَذَابِنَا	يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿176﴾	فَإِذَا	نَزَلَ	بِسَاحَتِهِمْ	فَسَآءَ	صَبَاحُ
क्या भला हमारे अज़ाब को	वो जल्दी मांगते हैं	फिर जब	वो उतरेगा	उनके सहन में	तो बहुत बुरी होगी	सुबह

الْمُنْذَرِيْنَ ﴿177﴾	وَتَوَلَّ	عَنْهُمْ	حَتّٰى حِيْنٍ ﴿178﴾	وَّأَبْصِرْ	فَسَوْفَ
डराए जाने वालों की	और मुंह फेर लीजिए	उनसे	एक वक़्त तक	और देखते रहिए	तो अनक़रीब

يُبْصِرُوْنَ ﴿179﴾	سُبْحٰنَ	رَبِّكَ	رَبِّ	الْعِزَّةِ	عَمَّا	يَصِفُوْنَ ﴿180﴾
वो भी देखेंगे	पाक है	रब आपका	रब	इज़्ज़त वाला	उससे जो	वो बयान कर रहे हैं

وَسَلٰمٌ	عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿181﴾	وَالْحَمْدُ	لِلّٰهِ	رَبِّ	الْعٰلَمِيْنَ ﴿182﴾
और सलाम है	सब रसूलों पर	और सब तारीफ़	अल्लाह के लिए है	जो रब है	तमाम जहानों का

ع 5 44 9

آيَاتُهَا: 88 — 38 سُوْرَةُ صٓ مَكِّيَّةٌ 38 — رُكُوْعَاتُهَا: 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

صٓ	وَالْقُرْاٰنِ	ذِي الذِّكْرِ ﴿1﴾	بَلِ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	فِيْ عِزَّةٍ
صٓ	क़सम है क़ुरआन	नसीहत वाले की	बल्कि	वो लोग जिन्होंने	कुफ़्र किया	तकब्बुर में

وَّشِقَاقٍ ﴿2﴾	كَمْ	أَهْلَكْنَا	مِنْ قَبْلِهِمْ	مِّنْ قَرْنٍ	فَنَادَوْا	وَّلَاتَ
और मुख़ालिफ़त में हैं	कितनी ही	हलाक कीं हमने	उनसे पहले	उम्मतें	तो उन्होंने पुकारा	और ना थी

حِيْنَ	مَنَاصٍ ﴿3﴾	وَعَجِبُوْٓا	أَنْ	جَآءَهُمْ	مُّنْذِرٌ	مِّنْهُمْ
उस वक़्त	कोई पनाह गाह	और उन्होंने ताअज्जुब किया	कि	आया उनके पास	एक डराने वाला	उनमें से

وَقَالَ	الْكٰفِرُوْنَ	هٰذَا	سٰحِرٌ	كَذَّابٌ ۖ (4)	اَجَعَلَ	الْاٰلِهَةَ	اِلٰهًا
और कहा	काफ़िरों ने	ये है	जादूगर	सख़्त झूठा	क्या उसने बना लिया	बहुत से इलाहों को	इलाह

وَّاحِدًا ۚ	اِنَّ	هٰذَا	لَشَيْءٌ	عُجَابٌ (5)	وَانْطَلَقَ	الْمَلَاُ	مِنْهُمْ
एक ही	बेशक	ये	अलबत्ता एक चीज़ है	बहुत अजीब	और चल दिए	सरदार	उनमें से

اَنِ	امْشُوْا	وَاصْبِرُوْا	عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ ۖ	اِنَّ	هٰذَا	لَشَيْءٌ
कि	चलो	और जमे रहो	अपने इलाहों पर	बेशक	ये	अलबत्ता एक चीज़ है

يُّرَادُ ۚ (6)	مَا	سَمِعْنَا	بِهٰذَا	فِى الْمِلَّةِ	الْاٰخِرَةِ ۚ	اِنْ	هٰذَآ
जो इरादा की जा रही है	नहीं	सुनी हमने	ये (बात)	मिल्लत में	पिछली	नहीं	ये

اِلَّا	اخْتِلَاقٌ ۚ (7)	ءَاُنْزِلَ	عَلَيْهِ	الذِّكْرُ	مِنْ بَيْنِنَا ۭ	بَلْ	هُمْ
मगर	मन गढ़त	क्या नाज़िल की गई	उस पर	नसीहत	हमारे दर्मियान से	बल्कि	वो

فِىْ شَكٍّ	مِّنْ ذِكْرِىْ ۚ	بَلْ	لَّمَّا	يَذُوْقُوْا	عَذَابِ ۭ (8)	اَمْ
शक में हैं	मेरी नसीहत से	बल्कि	अभी तक नहीं	उन्होंने चखा	अज़ाब मेरा	क्या

عِنْدَهُمْ	خَزَآئِنُ	رَحْمَةِ	رَبِّكَ	الْعَزِيْزِ	الْوَهَّابِ ۚ (9)	اَمْ
उनके पास	ख़ज़ाने हैं	रहमत के	आपके रब की	जो बड़ा ज़बरदस्त है	बहुत अता करने वाला है	या

لَهُمْ	مُّلْكُ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	وَمَا	بَيْنَهُمَا ۣ قف	فَلْيَرْتَقُوْا
उनके लिए	बादशाहत है	आसमानों	और ज़मीन की	और जो	दर्मियान है उन दोनों के	पस चाहिए कि वो चढ़ जाएें

فِى الْاَسْبَابِ (10)	جُنْدٌ مَّا	هُنَالِكَ	مَهْزُوْمٌ	مِّنَ الْاَحْزَابِ (11)
रास्तों में (आसमान के)	एक लश्कर हक़ीर सा	उसी जगह	शिकस्त खाने वाला है	गिरोहों में से

كَذَّبَتْ	قَبْلَهُمْ	قَوْمُ	نُوْحٍ	وَّعَادٌ	وَّفِرْعَوْنُ	ذُو الْاَوْتَادِ ۙ (12)
झुठलाया	उनसे पहले	क़ौमे	नूह ने	और आद	और फ़िरऔन	मेखों वाले ने

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَثَمُودُ	وَقَوْمُ	لُوطٍ	وَأَصْحَابُ لْـَٔيْكَةِ ۚ	أُولَٰٓئِكَ	الْأَحْزَابُ ⑬	إِنْ
और समूद ने	और क़ौमे	लूत	और ऐकः वालों ने	यही हैं वो	गिरोह	नहीं

ع 14 1 10

كُلٌّ	إِلَّا	كَذَّبَ	الرُّسُلَ	فَحَقَّ	عِقَابِ ⑭ ع	وَمَا	يَنظُرُ	هَٰٓؤُلَآءِ
सब ने	मगर	झुठलाया	रसूलों को	तो साबित हो गई	सज़ा मेरी	और नहीं	इन्तिज़ार करते	ये लोग

إِلَّا	صَيْحَةً	وَّاحِدَةً	مَّا	لَهَا	مِن فَوَاقٍ ⑮	وَقَالُوا	رَبَّنَا
मगर	चिंघाड़ का	एक ही	नहीं (होगा)	जिसके लिए	कोई वक़्फ़ा	और उन्होंने कहा	ऐ हमारे रब

عَجِّل	لَّنَا	قِطَّنَا	قَبْلَ	يَوْمِ الْحِسَابِ ⑯	اصْبِرْ	عَلَىٰ مَا
जल्दी दे	हमें	हिस्सा हमारा	पहले	यौमे हिसाब के	सब्र कीजिए	उस पर जो

يَقُولُونَ	وَاذْكُرْ	عَبْدَنَا	دَاوُدَ	ذَا الْأَيْدِ ۖ	إِنَّهُ	أَوَّابٌ ⑰
वो कहते हैं	और ज़िक्र कीजिए	हमारे बन्दे	दाऊद का	जो क़ुव्वत वाला था	बेशक वो	बहुत रुजूअ करने वाला था

إِنَّا	سَخَّرْنَا	الْجِبَالَ	مَعَهُ	يُسَبِّحْنَ	بِالْعَشِيِّ	وَالْإِشْرَاقِ ⑱ لا
बेशक हम	मुसख़्ख़र किया हमने	पहाड़ों को	साथ उसके	वो तस्बीह करते थे	शाम को	और सुबह को

وَالطَّيْرَ	مَحْشُورَةً ۖ	كُلٌّ	لَّهُ	أَوَّابٌ ⑲	وَشَدَدْنَا	مُلْكَهُ
और परिन्दे	इकट्ठे किए हुए	सब के सब	उसके लिए	रुजूअ करने वाले थे	और मज़बूत कर दी हमने	सलतनत उसकी

وَآتَيْنَاهُ	الْحِكْمَةَ	وَفَصْلَ	الْخِطَابِ ⑳	وَهَلْ	أَتَاكَ	نَبَؤُا
और दी हमने उसे	हिकमत	और फ़ैसलाकुन	बात (की सलाहियत)	और क्या	आई आपके पास	ख़बर

الْخَصْمِ ۘ	إِذْ	تَسَوَّرُوا	الْمِحْرَابَ ㉑ لا	إِذْ	دَخَلُوا	عَلَىٰ دَاوُدَ
झगड़ने वालों की	जब	वो दीवार फांद कर आए थे	इबादत ख़ाने में	जब	वो दाख़िल हुए	दाऊद पर

وقف لازم

فَفَزِعَ	مِنْهُمْ	قَالُوا	لَا تَخَفْ ۖ	خَصْمَانِ	بَغَىٰ	بَعْضُنَا
तो वो घबरा गया	उनसे	उन्होंने कहा	ना तुम डरो	(हम) दो झगड़ने वाले हैं	ज़्यादती की	हमारे बाज़ ने

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلٰى بَعْضٍ	فَاحْكُمْ	بَيْنَنَا	بِالْحَقِّ	وَلَا	تُشْطِطْ	وَاهْدِنَآ
बाज़ पर	पस फ़ैसला कर दे	दर्मियान हमारे	साथ हक़ के	और ना	तू बेइंसाफ़ी कर	और रहनुमाई कर हमारी

اِلٰى سَوَآءِ	الصِّرَاطِ ﴿22﴾	اِنَّ	هٰذَآ	اَخِىْ قف	لَهٗ	تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ
तरफ़ सीधे	रास्ते के	बेशक	ये	मेरा भाई है	इसकी हैं	निन्नानवे

نَعْجَةً	وَّلِىَ	نَعْجَةٌ	وَّاحِدَةٌ قف	فَقَالَ	اَكْفِلْنِيْهَا	وَعَزَّنِىْ
दुम्बियां	और मेरे लिए	दुम्बी है	एक ही	तो इसने कहा	सौंप दे मुझे इसे	और इसने ग़लबा पा लिया मुझ पर

فِى الْخِطَابِ ﴿23﴾	قَالَ	لَقَدْ	ظَلَمَكَ	بِسُؤَالِ	نَعْجَتِكَ	اِلٰى نِعَاجِهٖ ط
गुफ़्तगू में	उसने कहा	अलबत्ता तहक़ीक़	इसने ज़ुल्म किया तुझ पर	सवाल करके	तेरी दुम्बी का	तरफ़ अपनी दुम्बियों के

وَاِنَّ	كَثِيْرًا	مِّنَ الْخُلَطَآءِ	لَيَبْغِىْ	بَعْضُهُمْ	عَلٰى بَعْضٍ	اِلَّا
और बेशक	बहुत से	शिराकत दारों में से	अलबत्ता ज़्यादती करते हैं	बाज़ उनके	बाज़ पर	मगर

الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	وَقَلِيْلٌ مَّا	هُمْ ط	وَظَنَّ	دَاوٗدُ
वो जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	और कितने थोड़े हैं	वो	और समझ गया	दाऊद

اَنَّمَا	فَتَنّٰهُ	فَاسْتَغْفَرَ	رَبَّهٗ	وَخَرَّ	رَاكِعًا	وَّاَنَابَ ﴿24﴾ السجدة
बेशक	आज़माया है हमने उसे	पस उसने बख़्शिश मांगी	अपने रब से	और वो गिर पड़ा	रुकूअ करते हुए	और उसने रुजूअ कर लिया

فَغَفَرْنَا	لَهٗ	ذٰلِكَ ط	وَاِنَّ	لَهٗ	عِنْدَنَا	لَزُلْفٰى	وَحُسْنَ
पस बख़्श दिया हमने	उसे	उसमें	और बेशक	उसके लिए	हमारे यहां	अलबत्ता तक़र्रुब है	और बेहतर

مَاٰبٍ ﴿25﴾	يٰدَاوٗدُ	اِنَّا	جَعَلْنٰكَ	خَلِيْفَةً	فِى الْاَرْضِ	فَاحْكُمْ	بَيْنَ
ठिकाना है	ऐ दाऊद	बेशक हम	बनाया हमने तुझे	ख़लीफ़ा	ज़मीन में	पस फ़ैसला कर	दर्मियान

النَّاسِ	بِالْحَقِّ	وَلَا	تَتَّبِعِ	الْهَوٰى	فَيُضِلَّكَ	عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ط
लोगों के	साथ हक़ के	और ना	तू पैरवी कर	ख़्वाहिश की	तो वो भटका देगी तुझे	अल्लाह के रास्ते से

السجدة 10

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

شَدِيدٌ	عَذَابٌ	لَهُمْ	عَن سَبِيلِ اللّٰهِ	يَضِلُّونَ	الَّذِينَ	إِنَّ
शदीद	अज़ाब है	उनके लिए	अल्लाह के रास्ते से	भटकते हैं	वो जो	बेशक

ع 2 12 11

وَالْأَرْضَ	السَّمَاءَ	خَلَقْنَا	وَمَا	الْحِسَابِ ﴿26﴾ ع	يَوْمَ	نَسُوا	بِمَا
और ज़मीन को	आसमान	पैदा किया हमने	और नहीं	हिसाब के	दिन को	वो भूल गए	बवजह उसके जो

فَوَيْلٌ	كَفَرُوا ج	الَّذِينَ	ظَنُّ	ذٰلِكَ	بَاطِلًا ط	بَيْنَهُمَا	وَمَا
पस हलाकत है	कुफ़्र किया	उनका जिन्होंने	गुमान है	ये	बातिल	इन दोनों के दर्मियान है	और जो

اٰمَنُوا	الَّذِينَ	نَجْعَلُ	أَمْ	مِنَ النَّارِ ﴿27﴾ ط	كَفَرُوا	لِلَّذِينَ
ईमान लाए	उन्हें जो	हम कर देंगे	क्या	आग से	कुफ़्र किया	उनके लिए जिन्होंने

نَجْعَلُ	أَمْ	فِي الْأَرْضِ ز	كَالْمُفْسِدِينَ	الصّٰلِحٰتِ	وَعَمِلُوا
हम कर देंगे	या	ज़मीन में	फ़साद करने वालों की तरह	नेक	और उन्होंने अमल किए

لِيَدَّبَّرُوا	مُبٰرَكٌ	إِلَيْكَ	أَنزَلْنٰهُ	كِتٰبٌ	كَالْفُجَّارِ ﴿28﴾	الْمُتَّقِينَ
ताकि वो ग़ौरो फ़िक्र करें	बाबरकत है	आपकी तरफ़	नाज़िल किया हमने उसे	एक किताब है	बदकारों की तरह	मुत्तक़ी लोगों को

سُلَيْمٰنَ ط	لِدَاوٗدَ	وَوَهَبْنَا	أُولُوا الْأَلْبَابِ ﴿29﴾	وَلِيَتَذَكَّرَ	اٰيٰتِهِ
सुलैमान	दाऊद को	और अता किया हमने	अक़्ल वाले	और ताकि नसीहत पकड़ें	उसकी आयात में

بِالْعَشِيِّ	عَلَيْهِ	عُرِضَ	إِذْ	أَوَّابٌ ﴿30﴾ ط	إِنَّهُ	الْعَبْدُ ط	نِعْمَ
शाम के वक़्त	उस पर	पेश किए गए	जब	बहुत रुजूअ करने वाला था	बेशक वो	बंदा	कितना अच्छा

عَن ذِكْرِ	الْخَيْرِ	حُبَّ	أَحْبَبْتُ	إِنِّي	فَقَالَ	الْجِيَادُ ﴿31﴾ لا	الصّٰفِنٰتُ
याद की वजह से	माल की	मोहब्बत को	महबूब रखा मैंने	बेशक मैं	तो उसने कहा	उम्दा	असील घोड़े

مَسْحًا	فَطَفِقَ	عَلَيَّ ط	رُدُّوهَا	بِالْحِجَابِ ﴿32﴾ وقفة	تَوَارَتْ	حَتّٰى	رَبِّي ج
हाथ फेरने	तो लगा	मुझ पर	फेर लाओ उन्हें	पर्दे में	वो छुप गए	यहां तक कि	अपने रब की

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِالسُّوْقِ	وَالْاَعْنَاقِ ﴿33﴾	وَلَقَدْ	فَتَنَّا	سُلَيْمٰنَ	وَاَلْقَيْنَا
पिंडलियों पर	और गर्दनों पर	और अलबत्ता तहक़ीक़	आज़माया हमने	सुलैमान को	और डाल दिया हमने

عَلٰى كُرْسِيِّهٖ	جَسَدًا	ثُمَّ	اَنَابَ ﴿34﴾	قَالَ	رَبِّ	اغْفِرْ	لِيْ
उसकी कुर्सी पर	एक जिस्म	फिर	उसने रुजूअ कर लिया	उसने कहा	ऐ मेरे रब	बख़्श दे	मुझे

وَهَبْ	لِيْ	مُلْكًا	لَّا يَنْۢبَغِيْ	لِاَحَدٍ	مِّنْۢ بَعْدِيْ ۚ	اِنَّكَ	اَنْتَ
और अता कर	मुझे	ऐसी बादशाहत	ना हासिल हो	किसी एक को	मेरे बाद	बेशक तू	तू ही है

الْوَهَّابُ ﴿35﴾	فَسَخَّرْنَا	لَهُ	الرِّيْحَ	تَجْرِيْ	بِاَمْرِهٖ	رُخَآءً	حَيْثُ
बहुत अता करने वाला	तो मुसख़्ख़र किया हमने	उसके लिए	हवा को	जो चलती थी	उसके हुक्म से	नर्मी से	जहां

اَصَابَ ﴿36﴾	وَالشَّيٰطِيْنَ	كُلَّ	بَنَّآءٍ	وَّغَوَّاصٍ ﴿37﴾	وَّاٰخَرِيْنَ
वो पहुंचना चाहता	और सरकश जिन्नों को	हर तरह के	मेमार	और ग़ोता ख़ोर	और कुछ दूसरे

مُقَرَّنِيْنَ	فِي الْاَصْفَادِ ﴿38﴾	هٰذَا	عَطَآؤُنَا	فَامْنُنْ	اَوْ	اَمْسِكْ
जकड़े हुए	बेड़ियों में	ये है	बख़्शिश थी हमारी	पस एहसान करो	या	रोक लो

بِغَيْرِ	حِسَابٍ ﴿39﴾	وَاِنَّ	لَهٗ	عِنْدَنَا	لَزُلْفٰى	وَحُسْنَ	مَاٰبٍ ﴿40﴾ ع
बग़ैर	हिसाब के	और बेशक	उसके लिए	हमारे पास	अलबत्ता तक़र्रुब है	और बेहतरीन	ठिकाना है

ع 3 14 12

وَاذْكُرْ	عَبْدَنَآ	اَيُّوْبَ ۘ	اِذْ	نَادٰى	رَبَّهٗٓ	اَنِّيْ	مَسَّنِيَ
और ज़िक्र कीजिए	हमारे बंदे	अय्यूब का	जब	उसने पुकारा	अपने रब को	बेशक मुझे	पहुंचाई मुझे

وقف لازم

الشَّيْطٰنُ	بِنُصْبٍ	وَّعَذَابٍ ﴿41﴾ ط	اُرْكُضْ	بِرِجْلِكَ ۚ	هٰذَا	مُغْتَسَلٌۢ
शैतान ने	तकलीफ़	और अज़ाब	मार	पांव अपना	ये	नहाने का पानी है

بَارِدٌ	وَّشَرَابٌ ﴿42﴾	وَوَهَبْنَا	لَهٗٓ	اَهْلَهٗ	وَمِثْلَهُمْ	مَّعَهُمْ
ठंडा	और पीने का पानी है	और अता किए हमने	उसे	उसके घर वाले	और मानिंद उनके	साथ उनके

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

رَحْمَةً	مِّنَّا	وَذِكْرٰى	لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿43﴾	وَخُذْ	بِيَدِكَ
बतौर ए रहमत	हमारी तरफ़ से	और एक नसीहत	अक़्ल वालों के लिए	और ले ले	अपने हाथ से

ضِغْثًا	فَاضْرِبْ	بِّهٖ	وَلَا	تَحْنَثْ ؕ	اِنَّا	وَجَدْنٰهُ	صَابِرًا ؕ
तिनकों का एक मुट्ठा	फिर मार	साथ उसके	और ना	तू क़सम तोड़	बेशक हम	पाया हमने उसे	साबिर

نِعْمَ	الْعَبْدُ ؕ	اِنَّهٗۤ	اَوَّابٌ ﴿44﴾	وَاذْكُرْ	عِبٰدَنَاۤ	اِبْرٰهِيْمَ
कितना अच्छा	बंदा था	बेशक वो	बहुत रुजूअ करने वाला था	और ज़िक्र करो	हमारे बंदों	इब्राहीम

وَاِسْحٰقَ	وَيَعْقُوْبَ	اُولِي الْاَيْدِيْ	وَالْاَبْصَارِ ﴿45﴾	اِنَّاۤ
और इसहाक़	और याक़ूब का	जो हाथों वाले	और आंखों वाले थे	बेशक हम

اَخْلَصْنٰهُمْ	بِخَالِصَةٍ	ذِكْرَى	الدَّارِ ﴿46﴾ ۚ	وَاِنَّهُمْ	عِنْدَنَا
ख़ालिस कर लिया था हमने उन्हें	साथ ख़ास सिफ़त के	(जो) याद थी	असल घर की	और बेशक वो	हमारे नज़दीक

لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ	الْاَخْيَارِ ﴿47﴾ ؕ	وَاذْكُرْ	اِسْمٰعِيْلَ	وَالْيَسَعَ
अलबत्ता चुने हुओं में से थे	जो नेक थे	और ज़िक्र कीजिए	इस्माईल	और यसअ

وَذَاالْكِفْلِ ؕ	وَكُلٌّ	مِّنَ الْاَخْيَارِ ﴿48﴾ ؕ	هٰذَا	ذِكْرٌ ؕ	وَاِنَّ	لِلْمُتَّقِيْنَ
और ज़ुलकिफ़्ल का	और वो सब	नेक लोगों में से थे	ये	एक ज़िक्र है	और बेशक	मुत्तक़ी लोगों के लिए

لَحُسْنَ	مَاٰبٍ ﴿49﴾ ۙ	جَنّٰتِ	عَدْنٍ	مُّفَتَّحَةً	لَّهُمُ	الْاَبْوَابُ ﴿50﴾ ۚ
अलबत्ता अच्छा है	ठिकाना	बाग़ात	हमेशगी के	खुले होंगे	उनके लिए	दरवाज़े

مُتَّكِـِٕيْنَ	فِيْهَا	يَدْعُوْنَ	فِيْهَا	بِفَاكِهَةٍ	كَثِيْرَةٍ	وَّشَرَابٍ ﴿51﴾
तकिया लगाए हुए होंगे	उनमें	तलब करेंगे वो	उनमें	फल	बहुत से	और मशरूबात

وَعِنْدَهُمْ	قٰصِرٰتُ	الطَّرْفِ	اَتْرَابٌ ﴿52﴾	هٰذَا	مَا	تُوْعَدُوْنَ
और उनके पास होंगी	नीची रखने वालियां	निगाहों को	हम उम्र	ये है	वो जिसका	तुम वादा किए जाते थे

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الثلثة

لِيَوْمِ	الْحِسَابِ (53) الثلثة	اِنَّ	هٰذَا	لَرِزْقُنَا	مَا	لَهٗ	مِنْ نَّفَادٍ (54) ج
दिन के लिए	हिसाब के	बेशक	ये	अलबत्ता रिज़्क़ है हमारा	नहीं है	उसके लिए	कभी ख़त्म होना

هٰذَا ط	وَاِنَّ	لِلطّٰغِيْنَ	لَشَرَّ	مَاٰبٍ (55) لا	جَهَنَّمَ ج	يَصْلَوْنَهَا ج
ये है (बदला)	और बेशक	सरकश लोगों के लिए	अलबत्ता बुरा है	ठिकाना	जहन्नम	वो जलेंगे उसमें

فَبِئْسَ	الْمِهَادُ (56)	هٰذَا لا	فَلْيَذُوْقُوْهُ	حَمِيْمٌ	وَّغَسَّاقٌ (57) لا
तो बहुत बुरा है	ठिकाना	ये है (बदला)	पस चाहिए कि वो चखें उसे	खौलता हुआ पानी	और पीप

وَّاٰخَرُ	مِنْ شَكْلِهٖٓ	اَزْوَاجٌ (58) ط	هٰذَا	فَوْجٌ	مُّقْتَحِمٌ	مَّعَكُمْ ج
और कुछ दूसरे	उसकी शक्ल के	कई क़िस्मों के	ये	एक फ़ौज/लश्कर है	घुसने वाला है	साथ तुम्हारे

لَا مَرْحَبًا	بِهِمْ ط	اِنَّهُمْ	صَالُوا	النَّارِ (59)	قَالُوْا	بَلْ	اَنْتُمْ قف
नहीं कोई ख़ुश आमदीद	उन्हें	बेशक वो	जलने वाले हैं	आग में	वो कहेंगे	बल्कि	तुम

لَا مَرْحَبًا	بِكُمْ ط	اَنْتُمْ	قَدَّمْتُمُوْهُ	لَنَا ج	فَبِئْسَ	الْقَرَارُ (60)
नहीं कोई ख़ुश आमदीद	तुम्हें	तुम ही	आगे लाए हो तुम उसे	हमारे लिए	तो कितनी बुरी है	जाय क़रार

قَالُوْا	رَبَّنَا	مَنْ	قَدَّمَ	لَنَا	هٰذَا	فَزِدْهُ	عَذَابًا
वो कहेंगे	ऐ हमारे रब	जो	आगे लाया	हमारे	ये	पस ज़्यादा दे उसे	अज़ाब

ضِعْفًا	فِي النَّارِ (61)	وَقَالُوْا	مَا	لَنَا	لَا نَرٰى	رِجَالًا	كُنَّا
कई गुना	आग में	और वो कहेंगे	क्या है	हमारे लिए	नहीं हम देखते	कुछ लोगों को	थे हम

نَعُدُّهُمْ	مِّنَ الْاَشْرَارِ (62) ط	اَتَّخَذْنٰهُمْ	سِخْرِيًّا	اَمْ	زَاغَتْ	عَنْهُمُ
शुमार करते उन्हें	शरीर लोगों में से	क्या बना लिया हमने उनको	मज़ाक़	या	कज हो गईं	उनसे

الْاَبْصَارُ (63)	اِنَّ	ذٰلِكَ	لَحَقٌّ	تَخَاصُمُ	اَهْلِ النَّارِ (64) ع	قُلْ
निगाहें	बेशक	ये	अलबत्ता हक़ है	बाहम झगड़ना	आग वालों का	कह दीजिए

ع 4 24 13

اِنَّمَآ	اَنَا	مُنْذِرٌ ۖ	وَّمَا	مِنْ اِلٰهٍ	اِلَّا	اللّٰهُ	الْوَاحِدُ
बेशक	मैं	डराने वाला हूं	और नहीं	कोई इलाह (बरहक़)	सिवाए	अल्लाह के	जो एक है

الْقَهَّارُ ﴿65﴾ ج	رَبُّ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	وَمَا	بَيْنَهُمَا	الْعَزِيْزُ
बहुत ज़बरदस्त है	रब है	आसमानों	और ज़मीन का	और जो कुछ	उन दोनों के दर्मियान है	जो बहुत ज़बरदस्त है

الْغَفَّارُ ﴿66﴾	قُلْ	هُوَ	نَبَؤٌا	عَظِيْمٌ ﴿67﴾ لا	اَنْتُمْ	عَنْهُ
बहुत बख़्शिश फ़रमाने वाला है	कह दीजिए	वो	एक ख़बर है	बहुत बड़ी	तुम	उससे

مُعْرِضُوْنَ ﴿68﴾	مَا	كَانَ	لِيَ	مِنْ عِلْمٍ	بِالْمَلَاِ الْاَعْلٰٓى	اِذْ
ऐराज़ करने वाले हो	नहीं	है	मुझे	कोई इल्म	मलाए आला/मुक़र्रब फ़रिश्तों का	जब

يَخْتَصِمُوْنَ ﴿69﴾	اِنْ	يُّوْحٰٓى	اِلَيَّ	اِلَّآ	اَنَّمَآ	اَنَا	نَذِيْرٌ
वो झगड़ते हैं	नहीं	वही की जाती	मेरी तरफ़	मगर	ये कि	मैं तो	डराने वाला हूं

مُّبِيْنٌ ﴿70﴾	اِذْ	قَالَ	رَبُّكَ	لِلْمَلٰٓئِكَةِ	اِنِّيْ	خَالِقٌۢ	بَشَرًا
खुल्लम-खुल्ला	जब	फ़रमाया	आपके रब ने	फ़रिश्तों से	बेशक मैं	पैदा करने वाला हूं	एक बशर को

مِّنْ طِيْنٍ ﴿71﴾	فَاِذَا	سَوَّيْتُهٗ	وَنَفَخْتُ	فِيْهِ	مِنْ رُّوْحِيْ	فَقَعُوْا
मिट्टी से	फिर जब	दुरुस्त कर दूं मैं उसे	और फूंक दूं मैं	उसमें	अपनी रूह से	तो गिर पड़ना

لَهٗ	سٰجِدِيْنَ ﴿72﴾	فَسَجَدَ	الْمَلٰٓئِكَةُ	كُلُّهُمْ	اَجْمَعُوْنَ ﴿73﴾ لا	اِلَّآ
उसके लिए	सज्दा करते हुए	तो सज्दा किया	फ़रिश्तों ने	उन सबने	इकट्ठे	सिवाए

اِبْلِيْسَ ؕ	اِسْتَكْبَرَ	وَكَانَ	مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿74﴾	قَالَ	يٰٓاِبْلِيْسُ	مَا
इब्लीस के	उसने तकब्बुर किया	और हो गया वो	काफ़िरों में से	फ़रमाया	ऐ इब्लीस	किस चीज़ ने

مَنَعَكَ	اَنْ	تَسْجُدَ	لِمَا	خَلَقْتُ	بِيَدَيَّ ؕ	اَسْتَكْبَرْتَ
रोका तुझे	इससे कि	तू सज्दा करे	उसको जिसे	पैदा किया मैं ने	अपने दोनों हाथों से	क्या तकब्बुर किया तूने

ALL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَمْ	كُنْتَ	مِنَ الْعَالِيْنَ ﴿75﴾	قَالَ	اَنَا	خَيْرٌ	مِّنْهُ ؕ	خَلَقْتَنِيْ
या	था तू	बुलंद मर्तबा लोगों में से	उसने कहा	मैं	बेहतर हूं	उससे	पैदा किया तूने मुझे

مِنْ نَّارٍ	وَّ خَلَقْتَهٗ	مِنْ طِيْنٍ ﴿76﴾	قَالَ	فَاخْرُجْ	مِنْهَا	فَاِنَّكَ
आग से	और पैदा किया तूने उसे	मिट्टी से	फ़रमाया	पस निकल जा	इससे	पस बेशक तू

رَجِيْمٌ ﴿77﴾ ۚ	وَّ اِنَّ	عَلَيْكَ	لَعْنَتِيْۤ	اِلٰى يَوْمِ	الدِّيْنِ ﴿78﴾	قَالَ
मरदूद है	और बेशक	तुझ पर	लानत है मेरी	दिन तक	बदले के	उसने कहा

رَبِّ	فَاَنْظِرْنِيْۤ	اِلٰى يَوْمِ	يُبْعَثُوْنَ ﴿79﴾	قَالَ	فَاِنَّكَ
ऐ मेरे रब	फिर मोहलत दे मुझे	उस दिन तक	जब वो सब उठाए जाऐंगे	फ़रमाया	पस बेशक तू

مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿80﴾ ۙ	اِلٰى يَوْمِ	الْوَقْتِ	الْمَعْلُوْمِ ﴿81﴾	قَالَ	فَبِعِزَّتِكَ
मोहलत दिए जाने वालों में से है	उस दिन तक	जिसका वक़्त	मालूम है	उसने कहा	पस क़सम है तेरी इज़्ज़त की

لَاُغْوِيَنَّهُمْ	اَجْمَعِيْنَ ﴿82﴾ ۙ	اِلَّا	عِبَادَكَ	مِنْهُمُ	الْمُخْلَصِيْنَ ﴿83﴾
अलबत्ता मैं ज़रूर गुमराह कर दूं गा उन्हें	सब के सब को	सिवाए	तेरे बंदों के	उनमें से	जो ख़ालिस किए हुए हैं

قَالَ	فَالْحَقُّ ۬	وَالْحَقَّ	اَقُوْلُ ﴿84﴾ ۚ	لَاَمْلَـَٔنَّ	جَهَنَّمَ	مِنْكَ
फ़रमाया	पस हक़ है	और हक़ ही	मैं कहता हूं	अलबत्ता मैं ज़रूर भर दूं गा	जहन्नम को	तुझ से

وَمِمَّنْ	تَبِعَكَ	مِنْهُمْ	اَجْمَعِيْنَ ﴿85﴾	قُلْ	مَاۤ	اَسْـَٔلُكُمْ	عَلَيْهِ
और उनसे जो	पैरवी करेंगे तेरी	उनमें से	सब के सब से	कह दीजिए	नहीं	मैं मांगता तुमसे	उस पर

مِنْ اَجْرٍ	وَّمَاۤ	اَنَا	مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ ﴿86﴾	اِنْ	هُوَ	اِلَّا	ذِكْرٌ
कोई अज्र	और नहीं हूं	मैं	तकल्लुफ़ करने वालों में से	नहीं है	वो	मगर	एक नसीहत

لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿87﴾	وَ لَتَعْلَمُنَّ	نَبَاَهٗ	بَعْدَ	حِيْنٍ ﴿88﴾ ع
तमाम जहान वालों के लिए	और अलबत्ता तुम ज़रूर जान लोगे	ख़बर उसकी	बाद	एक वक़्त के

ع 5 24 14

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

آيَاتُهَا: 75 — 39 سُوْرَةُ الزُّمَرِ مَكِّيَّةٌ 59 — رُكُوْعَاتُهَا: 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

تَنْزِيْلُ	الْكِتٰبِ	مِنَ اللّٰهِ	الْعَزِيْزِ	الْحَكِيْمِ ①	اِنَّآ	اَنْزَلْنَآ
नाज़िल करना है	किताब का	अल्लाह की तरफ़ से	जो बहुत ज़बरदस्त है	ख़ूब हिक्मत वाला है	बेशक हम	नाज़िल की हमने

اِلَيْكَ	الْكِتٰبَ	بِالْحَقِّ	فَاعْبُدِ	اللّٰهَ	مُخْلِصًا	لَّهُ	الدِّيْنَ ② ط
तरफ़ आपके	किताब	साथ हक़ के	पस इबादत कीजिए	अल्लाह की	ख़ालिस करते हुए	उसके लिए	दीन को

اَلَا	لِلّٰهِ	الدِّيْنُ	الْخَالِصُ ط	وَالَّذِيْنَ	اتَّخَذُوْا	مِنْ دُوْنِهٖٓ
ख़बरदार	अल्लाह ही के लिए है	दीन	ख़ालिस	और वो जिन्होंने	बना रखे हैं	उसके सिवा

وقف لازم

اَوْلِيَآءَ م	مَا	نَعْبُدُهُمْ	اِلَّا	لِيُقَرِّبُوْنَآ	اِلَى اللّٰهِ	زُلْفٰى ط	اِنَّ
सरपरस्त	नहीं	हम इबादत करते उनकी	मगर	ताकि वो क़रीब कर दें हमें	तरफ़ अल्लाह के	क़रीब करना	बेशक

اللّٰهَ	يَحْكُمُ	بَيْنَهُمْ	فِيْ مَا	هُمْ	فِيْهِ	يَخْتَلِفُوْنَ ۵	اِنَّ	اللّٰهَ
अल्लाह	वो फ़ैसला करेगा	दर्मियान उनके	उसमें जो	वो	जिसमें	वो इख़्तिलाफ़ करते हैं	बेशक	अल्लाह

لَا يَهْدِيْ	مَنْ	هُوَ	كٰذِبٌ	كَفَّارٌ ③	لَوْ	اَرَادَ	اللّٰهُ	اَنْ
नहीं वो हिदायत देता	उसे जो है	वो	झूठा	बहुत नाशुक्रा	अगर	चाहता	अल्लाह	कि

يَّتَّخِذَ	وَلَدًا	لَّاصْطَفٰى	مِمَّا	يَخْلُقُ	مَا	يَشَآءُ لا	سُبْحٰنَهٗ ط
वो बना ले	औलाद	अलबत्ता वो चुन लेता	उसमें से जो	वो पैदा करता है	जो	वो चाहता है	पाक है वो

هُوَ	اللّٰهُ	الْوَاحِدُ	الْقَهَّارُ ④	خَلَقَ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ	بِالْحَقِّ ج
वो	अल्लाह	एक है	बहुत ज़बरदस्त है	उसने पैदा किया	आसमानों	और ज़मीन को	साथ हक़ के

يُكَوِّرُ	الَّيْلَ	عَلَى النَّهَارِ	وَيُكَوِّرُ	النَّهَارَ	عَلَى الَّيْلِ	وَسَخَّرَ
वो लपेटता है	रात को	दिन पर	और वो लपेटता है	दिन को	रात पर	और उसने मुसख़्ख़र कर रखा है

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الشَّمْسَ	وَالْقَمَرَ ؕ	كُلٌّ	يَّجْرِيْ	لِاَجَلٍ	مُّسَمًّى ؕ	اَلَا	هُوَ
सूरज	और चांद को	हर एक	चल रहा है	एक वक़्त के लिए	मुक़र्रर	ख़बरदार	वो ही है

الْعَزِيْزُ	الْغَفَّارُ ⑤	خَلَقَكُمْ	مِّنْ نَّفْسٍ	وَّاحِدَةٍ	ثُمَّ	جَعَلَ
बहुत ज़बरदस्त	बहुत बख़्शिश फ़रमाने वाला	उसने पैदा किया तुम्हें	जान से	एक ही	फिर	उसने बनाया

مِنْهَا	زَوْجَهَا	وَ اَنْزَلَ	لَكُمْ	مِّنَ الْاَنْعَامِ	ثَمٰنِيَةَ	اَزْوَاجٍ ؕ
उससे	जोड़ा उसका	और उसने उतारे	तुम्हारे लिए	मवेशियों में से	आठ	जोड़े

يَخْلُقُكُمْ	فِيْ بُطُوْنِ	اُمَّهٰتِكُمْ	خَلْقًا	مِّنْۢ بَعْدِ	خَلْقٍ
वो तख़लीक़ करता है तुम्हारी	पेटों में	तुम्हारी मांओं के	एक तख़लीक़	बाद	(दूसरी) तख़लीक़ के

فِيْ ظُلُمٰتٍ	ثَلٰثٍ ؕ	ذٰلِكُمُ	اللّٰهُ	رَبُّكُمْ	لَهُ	الْمُلْكُ ؕ	لَاۤ
अंधेरों में	तीन	ये है	अल्लाह	रब तुम्हारा	उसी के लिए है	बादशाहत	नहीं

اِلٰهَ	اِلَّا	هُوَ ۚ	فَاَنّٰى	تُصْرَفُوْنَ ⑥	اِنْ	تَكْفُرُوْا	فَاِنَّ
कोई इलाह (बरहक़)	मगर	वही	तो किस तरह	तुम फेरे जाते हो	अगर	तुम नाशुक्री करोगे	तो बेशक

اللّٰهَ	غَنِيٌّ	عَنْكُمْ ۚ	وَلَا	يَرْضٰى	لِعِبَادِهِ	الْكُفْرَ ۚ	وَاِنْ
अल्लाह	बहुत बेनियाज़ है	तुमसे	और नहीं	वो पसंद करता	अपने बंदों के लिए	नाशुक्री को	और अगर

تَشْكُرُوْا	يَرْضَهُ	لَكُمْ ؕ	وَلَا	تَزِرُ	وَازِرَةٌ	وِّزْرَ	اُخْرٰى ؕ
तुम शुक्र करोगे	वो पसंद करता उसे	तुम्हारे लिए	और नहीं	बोझ उठाएगी	कोई बोझ उठाने वाली	बोझ	दूसरी का

ثُمَّ	اِلٰى رَبِّكُمْ	مَّرْجِعُكُمْ	فَيُنَبِّئُكُمْ	بِمَا	كُنْتُمْ	تَعْمَلُوْنَ ؕ
फिर	तरफ़ अपने रब ही के	लौटना है तुम्हारा	फिर वो बताएगा तुम्हें	वो जो	थे तुम	तुम अमल करते

اِنَّهٗ	عَلِيْمٌۢ	بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ⑦	وَاِذَا	مَسَّ	الْاِنْسَانَ	ضُرٌّ
बेशक वो	ख़ूब जानने वाला है	सीनों वाले (भेद)	और जब	पहुंचती है	इंसान को	कोई तकलीफ़

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

دَعَا	رَبَّهٗ	مُنِيْبًا	اِلَيْهِ	ثُمَّ	اِذَا	خَوَّلَهٗ	نِعْمَةً
वो पुकारता है	अपने रब को	रुजूअ करते हुए	तरफ़ उसके	फिर	जब	वो अता कर देता है उसे	कोई नेअमत

مِّنْهُ	نَسِيَ	مَا	كَانَ	يَدْعُوْٓا	اِلَيْهِ	مِنْ قَبْلُ	وَجَعَلَ
अपने पास से	वो भूल जाता है	उसे जो	था वो	वो पुकारता	तरफ़ उसके	उससे पहले	और वो बना देता है

لِلّٰهِ	اَنْدَادًا	لِّيُضِلَّ	عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ	قُلْ	تَمَتَّعْ	بِكُفْرِكَ
अल्लाह के लिए	कुछ शरीक	ताकि वो भटका दे	उसके रास्ते से	कह दीजिए	फ़ायदा उठा ले	साथ अपने कुफ़्र के

قَلِيْلًا ۖ	اِنَّكَ	مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ﴿8﴾	اَمَّنْ هُوَ	قَانِتٌ	اٰنَآءَ
थोड़ा सा	बेशक तू	आग वालों में से है	क्या भला वो जो	बंदगी करने वाला है	घड़ियों में से

الَّيْلِ	سَاجِدًا	وَّقَآئِمًا	يَّحْذَرُ	الْاٰخِرَةَ	وَيَرْجُوْا	رَحْمَةَ
रात की	सज्दा करने वाला है	और क़याम करने वाला है	डरता है	आख़िरत से	और उम्मीद रखता है	रहमत की

رَبِّهٖ ؕ	قُلْ	هَلْ	يَسْتَوِى	الَّذِيْنَ	يَعْلَمُوْنَ	وَالَّذِيْنَ
अपने रब की	कह दीजिए	क्या	बराबर हो सकते हैं	वो जो	इल्म रखते हैं	और वो जो

لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ	اِنَّمَا	يَتَذَكَّرُ	اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿9﴾ ع	قُلْ	يٰعِبَادِ	الَّذِيْنَ
नहीं वो इल्म रखते	बेशक	नसीहत पकड़ते हैं	अक़्ल वाले	कह दीजिए	ऐ मेरे बंदो	वो जो

ع 1 9 15

اٰمَنُوا	اتَّقُوْا	رَبَّكُمْ ؕ	لِلَّذِيْنَ	اَحْسَنُوْا	فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا
ईमान लाए हो	डरो	अपने रब से	उनके लिए जिन्होंने	अच्छा किया	इस दुनिया में

حَسَنَةٌ ؕ	وَاَرْضُ	اللّٰهِ	وَاسِعَةٌ ؕ	اِنَّمَا	يُوَفَّى	الصّٰبِرُوْنَ
भलाई है	और ज़मीन	अल्लाह की	वसीअ है	बेशक	पूरा-पूरा दिए जाऐंगे	सब्र करने वाले

اَجْرَهُمْ	بِغَيْرِ	حِسَابٍ ﴿10﴾	قُلْ	اِنِّيْٓ	اُمِرْتُ	اَنْ	اَعْبُدَ
अज्र अपना	बग़ैर	हिसाब के	कह दीजिए	बेशक मैं	हुक्म दिया गया हूं मैं	कि	मैं इबादत करुं

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اللّٰهَ	مُخۡلِصًا	لَّهُ	الدِّيۡنَ ﴿11﴾	وَاُمِرۡتُ	لِاَنۡ	اَكُوۡنَ	اَوَّلَ
अल्लाह की	ख़ालिस करते हुए	उसके लिए	दीन को	और हुक्म दिया गया हूं मैं	ये कि	मैं हो जाऊं	सबसे पहला

الۡمُسۡلِمِيۡنَ ﴿12﴾	قُلۡ	اِنِّيۡۤ	اَخَافُ	اِنۡ	عَصَيۡتُ	رَبِّيۡ	عَذَابَ
फ़रमांबरदारों में से	कह दीजिए	बेशक मैं	मैं डरता हूं	अगर	नाफ़रमानी की मैंने	अपने रब की	अज़ाब से

يَوۡمٍ عَظِيۡمٍ ﴿13﴾	قُلِ	اللّٰهَ	اَعۡبُدُ	مُخۡلِصًا	لَّهٗ	دِيۡنِيۡ ﴿14﴾
बड़े दिन के	कह दीजिए	अल्लाह ही की	मैं इबादत करता हूं	ख़ालिस करते हुए	उसके लिए	अपने दीन को

فَاعۡبُدُوۡا	مَا	شِئۡتُمۡ	مِّنۡ دُوۡنِهٖ ؕ	قُلۡ	اِنَّ	الۡخٰسِرِيۡنَ
पस तुम इबादत करो	जिसकी	चाहो तुम	उसके सिवा	कह दीजिए	बेशक	ख़सारा पाने वाले

الَّذِيۡنَ	خَسِرُوۡۤا	اَنۡفُسَهُمۡ	وَاَهۡلِيۡهِمۡ	يَوۡمَ	الۡقِيٰمَةِ ؕ	اَلَا	ذٰلِكَ
वो हैं जिन्होंने	ख़सारे में डाला	अपने आपको	और अपने घर वालों को	दिन	क़यामत के	ख़बरदार	यही है

هُوَ	الۡخُسۡرَانُ	الۡمُبِيۡنُ ﴿15﴾	لَهُمۡ	مِّنۡ فَوۡقِهِمۡ	ظُلَلٌ	مِّنَ النَّارِ
वो	ख़सारा	खुल्लम-खुल्ला	उनके लिए	उनके ऊपर से	छतरियां हैं	आग की

وَمِنۡ تَحۡتِهِمۡ	ظُلَلٌ ؕ	ذٰلِكَ	يُخَوِّفُ	اللّٰهُ	بِهٖ	عِبَادَهٗ ؕ
और उनके नीचे से	छतरियां हैं	यही है	डराता है	अल्लाह	साथ इसके	अपने बंदो को

يٰعِبَادِ	فَاتَّقُوۡنِ ﴿16﴾	وَالَّذِيۡنَ	اجۡتَنَبُوا	الطَّاغُوۡتَ	اَنۡ	يَّعۡبُدُوۡهَا
ऐ मेरे बंदो	पस डरो मुझसे	और वो जिन्होंने	इज्तिनाब किया	ताग़ूत से	कि	वो इबादत करें उसकी

وَاَنَابُوۡۤا	اِلَى اللّٰهِ	لَهُمُ	الۡبُشۡرٰى ۚ	فَبَشِّرۡ	عِبَادِ ﴿17﴾	الَّذِيۡنَ
और रुजूअ किया	तरफ़ अल्लाह के	उनके लिए	ख़ुशख़बरी है	पस ख़ुशख़बरी दे दीजिए	मेरे बंदो को	वो लोग जो

يَسۡتَمِعُوۡنَ	الۡقَوۡلَ	فَيَتَّبِعُوۡنَ	اَحۡسَنَهٗ ؕ	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيۡنَ
ग़ौर से सुनते हैं	बात को	फिर वो पैरवी करते हैं	उसके बेहतरीन (हिस्से) की	यही लोग हैं	वो जो

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

هَدٰىهُمُ	اللّٰهُ	وَاُولٰٓئِكَ	هُمْ	اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿18﴾	اَفَمَنْ	حَقَّ
हिदायत दी उन्हें	अल्लाह ने	और यही लोग हैं	वो	जो अक़्ल वाले हैं	क्या भला जो	साबित हो गई

عَلَيْهِ	كَلِمَةُ	الْعَذَابِ ؕ	اَفَاَنْتَ	تُنْقِذُ	مَنْ	فِي النَّارِ ﴿19﴾ ج	لٰكِنِ
उस पर	बात	अज़ाब की	क्या भला आप	आप बचाऐंगे	उसे जो	आग में है	लेकिन

الَّذِيْنَ	اتَّقَوْا	رَبَّهُمْ	لَهُمْ	غُرَفٌ	مِّنْ فَوْقِهَا	غُرَفٌ
वो जिन्होंने	तक़वा किया	अपने रब का	उनके लिए	बालाख़ाने हैं	उनके ऊपर	(और) बालाख़ाने हैं

مَّبْنِيَّةٌ ۙ	تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ ؕ	وَعْدَ	اللّٰهِ ؕ	لَا يُخْلِفُ
बनाए हुए	बहती हैं	उनके नीचे से	नहरें	वादा है	अल्लाह का	ना ख़िलाफ़ करेगा

اللّٰهُ	الْمِيْعَادَ ﴿20﴾	اَلَمْ	تَرَ	اَنَّ	اللّٰهَ	اَنْزَلَ	مِنَ السَّمَآءِ
अल्लाह	वादे को	क्या नहीं	आपने देखा	बेशक़	अल्लाह ने	उतारा	आसमान से

مَآءً	فَسَلَكَهٗ	يَنَابِيْعَ	فِي الْاَرْضِ	ثُمَّ	يُخْرِجُ	بِهٖ	زَرْعًا
पानी	फिर उसने चलाया उसे	चश्मे (बनाकर)	ज़मीन में	फिर	वो निकालता है	साथ उसके	खेती को

مُّخْتَلِفًا	اَلْوَانُهٗ	ثُمَّ	يَهِيْجُ	فَتَرٰىهُ	مُصْفَرًّا	ثُمَّ	يَجْعَلُهٗ
मुख़्तलिफ़ हैं	रंग उसके	फिर	वो ख़ुश्क हो जाती है	फिर तुम देखते हो उसे	ज़र्द	फिर	वो कर देता है उसे

حُطَامًا ؕ	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَذِكْرٰى	لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿21﴾ ع	اَفَمَنْ	شَرَحَ	ع 2 12 16
रेज़ा-रेज़ा	यक़ीनन	उसमें	अलबत्ता नसीहत है	अक़्ल वालों के लिए	क्या भला वो जो	खोल दिया	

اللّٰهُ	صَدْرَهٗ	لِلْاِسْلَامِ	فَهُوَ	عَلٰى نُوْرٍ	مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ	فَوَيْلٌ
अल्लाह ने	सीना उसका	इस्लाम के लिए	पस वो है	एक नूर पर	अपने रब की तरफ़ से	तो हलाकत है

لِّلْقٰسِيَةِ	قُلُوْبُهُمْ	مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ	اُولٰٓئِكَ	فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿22﴾
उनके लिए कि सख़्त हैं	दिल जिनके	अल्लाह की याद से	यही लोग हैं	खुली गुमराही में

HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَللّٰهُ	نَزَّلَ	اَحْسَنَ	الْحَدِيْثِ	كِتٰبًا	مُّتَشَابِهًا	مَّثَانِيَ ۖ	تَقْشَعِرُّ
अल्लाह ने	नाज़िल की	बेहतरीन	बात	ऐसी किताब	आपस में मिलती जुलती है	दोहराई जाने वाली है	लरज़ने लगती हैं

مِنْهُ	جُلُوْدُ	الَّذِيْنَ	يَخْشَوْنَ	رَبَّهُمْ ۚ	ثُمَّ	تَلِيْنُ	جُلُوْدُهُمْ
उससे	जिल्दें	उन लोगों की जो	डरते हैं	अपने रब से	फिर	नर्म हो जाती हैं	जिल्दें उनकी

وَقُلُوْبُهُمْ	اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ	ذٰلِكَ	هُدَى	اللّٰهِ	يَهْدِيْ	بِهٖ	مَنْ
और दिल उनके	तरफ़ अल्लाह की याद के	ये है	हिदायत	अल्लाह की	वो हिदायत देता है	साथ इसके	जिसे

يَّشَآءُ ؕ	وَمَنْ	يُّضْلِلِ	اللّٰهُ	فَمَا	لَهٗ	مِنْ هَادٍ ﴿23﴾	اَفَمَنْ
वो चाहता है	और जिसे	गुमराह कर दे	अल्लाह	तो नहीं	उसके लिए	कोई हिदायत देने वाला	क्या भला वो जो

يَّتَّقِيْ	بِوَجْهِهٖ	سُوْٓءَ	الْعَذَابِ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ ؕ	وَقِيْلَ	لِلظّٰلِمِيْنَ
बचेगा	साथ अपने चेहरे के	बुरे	अज़ाब से	दिन	क़यामत के	और कहा जाएगा	ज़ालिमों से

ذُوْقُوْا	مَا	كُنْتُمْ	تَكْسِبُوْنَ ﴿24﴾	كَذَّبَ	الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ	
चखो	जो	थे तुम	तुम कमाई करते	झुठलाया	उन लोगों ने जो	उनसे पहले थे	

فَاَتٰىهُمُ	الْعَذَابُ	مِنْ حَيْثُ	لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿25﴾	فَاَذَاقَهُمُ	اللّٰهُ	
तो आया उनके पास	अज़ाब	जहां से	ना वो शऊर रखते थे	तो चखाई उन्हें	अल्लाह ने	

وقف لازم

الْخِزْيَ	فِي الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا ۚ	وَلَعَذَابُ	الْاٰخِرَةِ	اَكْبَرُ ۘ	لَوْ	كَانُوْا
रुस्वाई	ज़िंदगी में	दुनिया की	और अलबत्ता अज़ाब	आख़िरत का	ज़्यादा बड़ा है	काश	होते वो

يَعْلَمُوْنَ ﴿26﴾	وَلَقَدْ	ضَرَبْنَا	لِلنَّاسِ	فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ	مِنْ كُلِّ	مَثَلٍ
वो जानते	और अलबत्ता तहक़ीक़	बयान की हमने	लोगों के लिए	इस क़ुरआन में	हर क़िस्म की	मिसाल

لَّعَلَّهُمْ	يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿27﴾ ۚ	قُرْاٰنًا	عَرَبِيًّا	غَيْرَ	ذِيْ عِوَجٍ	لَّعَلَّهُمْ
शायद कि वो	वो नसीहत पकड़ें	क़ुरआन	अरबी	नहीं है	टेढ़ वाला	शायद कि वो

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَتَّقُوْنَ ﴿28﴾	ضَرَبَ	اللّٰهُ	مَثَلًا	رَّجُلًا	فِيْهِ	شُرَكَآءُ	مُتَشٰكِسُوْنَ
वो डरें	बयान की	अल्लाह ने	मिसाल	एक आदमी की	जिस में	कई शरीक हैं	बाहम झगड़ा करने वाले

وَ رَجُلًا	سَلَمًا	لِّرَجُلٍ ؕ	هَلْ	يَسْتَوِيٰنِ	مَثَلًا ؕ	اَلْحَمْدُ
और एक शख़्स	जो सालिम/पूरा है	एक ही शख़्स के लिए	क्या	वो दोनों बराबर हो सकते हैं	मिसाल में	सब तारीफ़

لِلّٰهِ ۚ	بَلْ	اَكْثَرُهُمْ	لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿29﴾	اِنَّكَ	مَيِّتٌ	وَّ اِنَّهُمْ
अल्लाह के लिए है	बल्कि	अक्सर उनके	नहीं वो इल्म रखते	बेशक आप	मरने वाले हैं	और बेशक वो भी

مَّيِّتُوْنَ ﴿30﴾ ۙ	ثُمَّ	اِنَّكُمْ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ	عِنْدَ	رَبِّكُمْ	تَخْتَصِمُوْنَ ﴿31﴾ ع
मरने वाले हैं	फिर	बेशक तुम	दिन	क़यामत के	पास	अपने रब के	तुम झगड़ा करोगे

ع 3 10 17

AL HUDA INTERNATIONL WELF RE FOUNDATION